साहित्याकाश

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERRED MONTHLY JOURNAL

वर्ष– 1, खंड– 7, अंक– 7, जुलाई– 2024

साहित्याकाश

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERRED MONTHLY JOURNAL

वर्ष– 1, खंड– 7, अंक– 7, जुलाई– 2024

प्रधान संपादक

डॉ. संतोष कांबळे

पुस्तकालयाध्यक्ष,

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद

कार्यकारी संपादक

डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण

सहयोगी प्राध्यापक,

वसंतराव नाईक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

शहादा, जिला– नंदुरबार

सह–संपादक

प्रो. गौतम भाईदास कुवर

सह–संपादक

प्रो. सुनील गुलाब पानपाटील

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट श्री राजेश कुमार शर्मा

अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली

परामर्श मंडल

प्रो. अर्जुन चव्हाण
पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी)
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

प्रो. सुनिल बाबुराव कुलकर्णी
निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
नई दिल्ली
एवं
निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रो. एस.वी.एस.एस. नारायण राजू
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (हिंदी)
तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय,
तिरुवारूर

डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा,
(हैदराबाद केंद्र)

एम. नधीरा शिवंति
हिंदी अध्यापिका,
स्वामी विवेकानंद
सांस्कृतिक केंद्र,
कोलंबो, श्रीलंका

साहित्याकाश

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERRED MONTHLY JOURNAL

वर्ष– 1, खंड– 7, अंक– 7, जुलाई – 2024

PEER REVIEW COMMITTEE

डॉ. अर्चना पत्की, सेलू
डॉ. लूनेश कुमार वर्मा, छछानपैरी, छत्तीसगढ़
डॉ. मिनाक्षी सोनवणे, नागपुर
डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे, भूम, (महाराष्ट्र)
डॉ. मल्लिकार्जुन एन. उजीरे, (कर्नाटक)
डॉ. राहुल कुमार, झारखंड
डॉ. संदीप किर्दत, सातारा
डॉ. वनिता शर्मा, दिल्ली
डॉ. भावना कुमारी, रांची
डॉ. एकलारे चंद्रकांत, मुखेड, महाराष्ट्र
डॉ. अनामिका जैन, मुजफ्फरनगर
डॉ. मौसम कुमार ठाकुर, गोड्डा, झारखंड
डॉ. रौबी, अलीगढ़
डॉ. अमृत लाल जीनगर, पिण्डवाड़ा (राजस्थान)
डॉ. प्रकाश आठवले ऊरुण इस्लामपुर,
डॉ. राम आशीष तिवारी, छत्तीसगढ
डॉ. दीपक प्रसाद, रांची
डॉ. रामप्रवेश त्रिपाठी, देवरिया,
डॉ. परशुराम मालगे, मंगलुरू, (कर्नाटक)
डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा, बुलंदशहर
डॉ. विजय वाघ, सेनगाँव, (महाराष्ट्र)
डॉ. रेणुका चव्हाण, नासिक (महाराष्ट्र)
डॉ. लक्ष्मण कदम, मुदखेड (महाराष्ट्र)
डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार, पटना
डॉ. पवार सीताबाई नामदेव इंदापुर
डॉ. टी. लता मंगेश, तिरुपति
डॉ. आशीष कुमार तिवारी, छतरपुर (मध्य प्रदेश)
डॉ. राम सिंह सैन, राजस्थान,
डॉ. गोरखनाथ किर्दत, उरुण–इस्लामपूर
डॉ. वैशाली सुनील शिंदे, सातारा
डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता, गंगापुर सिटी
डॉ. संजीव कुमार, दरौली, सिवान
डॉ. सचिन जाधव, सिंदखेडा
डॉ. गोरख निलोबा बनसोडे, रहिमतपुर, महाराष्ट्र
डॉ. सुरेन्द्र कुमार, रतिया
डॉ. शीतल बियाणी, वाळूज
डॉ. नीलम धारीवाल, उत्तराखंड
डॉ. नीतू रानी, पंजाब
डॉ. सरोज पाटिल, बेतुल, म.प्र.
डॉ. सुनिल पाटिल, चेन्नई
अर्जुन कांबले, बेलगावी, कर्नाटक
ममता शत्रुघ्न माली, मुंबई
डॉ. देविदास जाधव, अर्जापूर, महाराष्ट्र
डॉ. सोनकांबले अरुण वाई,
सुषमा माधवराव नरांजे, भंडारा (महाराष्ट्र)
डॉ. श्रीलेखा के. एन., केरल
अजीति महेश्वर मिश्रा, मुंबई, (महाराष्ट्र)
वंदना शुक्ला, छतरपुर (मध्य प्रदेश)
प्रा. तेलसंग हनमंत भिमराव (महाराष्ट्र)
डॉ. मंगल कोंडिबा ससाणे, बारामती (महाराष्ट्र)

स्वामित्व : प्रधान संपादक, साहित्याकाश मासिक पत्रिका

प्रकाशक : डॉ. संतोष कांबळे

प्रधान संपादक, : डॉ. संतोष कांबळे

पुस्तकालयाध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद

E-mail- sahityaakash24@gmail.com

Website- https://www.sahityaakash.in

मुखपृष्ठ : अनुजीत

*'साहित्याकाश' में प्रकाशित रचनाकारों के विचार स्वयं उनके हैं । अतः संपादक का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

**'साहित्याकाश' पत्रिका से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे ।

प्रधान संपादक

डॉ. संतोष कांबळे

M.A. (History, Hindi), M.Lib. & I.Sc., M.Phil., PGDCA., PGDLAN., PGDT., UGC-NET, Ph.D.-LIS., (Ph.D.-Hindi)

पुस्तकालयाध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद

E-Mail- shreyashju@yahoo.co.in Mobile No.- 8125981194

Profile Link- DBHPSBEd (dbhpsabhabedhyderabad.com)

कार्यकारी संपादक

डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण

M.A., Ph.D.

सहयोगी प्राध्यापक, वसंतराव नाईक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शहादा, जिला– नंदुरबार

E-Mail- chavan.ajit2@gmail.com **Mobile No.- 9422262445**

Profile link- CV-Dr.-Chavan-Ajit-Chunilal.pdf (sspmvnc.ac.in)

सह–संपादक

प्रो. गौतम भाईदास कुवर

M.A., Ph.D

हिंदी विभाग प्रमुख

पूज्य साने गुरुजी विद्या प्रसारक मंडल का कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय शहादा जिला नंदुरबार महाराष्ट्र

E-Mail- gautamkuwar53@gmail.com **Mobile No.-** 84118 28448

Profile Link Microsoft Word - Kuwar sir Resume (psgvpasc.ac.in)

प्रो. सुनील गुलाब पानपाटील

M.A., Ph.D (SET)

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महिला महाविद्यालय, नंदुरबार

E-Mail- sgpanpatil@gmail.com **Mobile No.-** 9860235508

Profile Link- teaching-staff-list-2022-23.pdf (tessmmndb.org.in)

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट श्री राजेश कुमार शर्मा

B.A., LL.B

अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली, **E-Mail-** rajesh.shagun@gmail.com **Mobile No.-** 981144676

साहित्याकाश

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERRED MONTHLY JOURNAL

वर्ष– 1, खंड– 7, अंक– 7, जुलाई – 2024

अनुक्रम

अ. क्र.	साहित्याकाश वर्ष– 1, खंड– 7, अंक– 7, जुलाई– 2024		पृ.सं.
1.	संपादकीय	डॉ. संतोष कांबळे	03–04
		विविध विधाएँ एवं साहित्य	
2.	लेखक	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	05–14
	शोध आलेख शीर्षक	'कौन–सी कविता होती है पूरी'.... में वर्णित विभिन्न विमर्श	
3.	लेखक	डॉ. लूनेश कुमार वर्मा	15–22
	शोध आलेख शीर्षक	दलित प्रतिशोध: पुतला	
4.	लेखक	सारिका शंकरराव धुमाळ	23–28
	शोध आलेख शीर्षक	"भोलाराम का जीव" रचना में चित्रित सामाजिक व्यंग्य	
5.	लेखक	डॉ. रवींद्र पुंजाराम ठाकरे एवं प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे	29–34
	शोध आलेख शीर्षक	दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में यथार्थवादी स्वर	

6.	लेखक	डॉ. एस. कृष्ण बाबु	35–38
	शोध आलेख शीर्षक	आधुनिक तेलुगु कहानियों में आदर्श मानव मूल्य	
7.	लेखक	प्रो. पंढरीनाथ पाटील 'शिवांश'	39–40
	कहानी का शीर्षक	चाय का प्याला	
8.	लेखक	अनुजीत	41–48
	कहानी का शीर्षक	नक्काशी	
9.	लेखक	आकांक्षा सक्सेना	49–52
	कहानी का शीर्षक	फ्रेनेमी	
10.	लेखक	निधि चन्द्रा	53–53
	कविता का शीर्षक	मानवता	
11.	लेखक	टी. अनुसूरिया	54–54
	कविता का शीर्षक	माँ की ममता	
12.	लेखक	डॉ. शेख़ बेनज़ीर	55–56
	कविता का शीर्षक	हिंदी का उत्सव	

संपादकीय

विविध विधाएँ एवं साहित्य

जुलाई 2024 संस्करण को पाठक एवं विद्वत्त गण के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। संस्करण एक ऐसा साधन है जो कि पाठक वर्ग को विभिन्न मुद्दों एवं समसामयिक घटनाओं के साथ–साथ विभिन्न विचार दृष्टि से अवगत कराता है।

जुलाई संस्करण हमारे समक्ष विशेष संस्करण के रूप में प्रस्तुत होता है क्योंकि जहाँ एक ओर इस माह का प्रारंभ 1 जुलाई (चिकित्सक दिवस) चिकित्सकों के प्रति सम्मान प्रकट करता है वहीं 26 जुलाई भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम दिवस है जब संविधान द्वारा वर्ष 1947 में राष्ट्र ध्वज 'तिरंगे' को अपनाया गया। यह दिवस प्रत्येक भारतीय के लिए विशिष्ट महत्त्व का दिन है क्योंकि भारत का राष्ट्रीय ध्वज दिवस भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता के प्रतीक का सम्मान माना जाता है।

इस प्रकार यह माह विश्व जनसंख्या दिवस, राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस, राष्ट्रीय युवा दिवस, विश्व अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस, अंतर्राष्ट्रीय नेल्सन मंडेला दिवस, कारगिल विजय दिवस, राष्ट्रीय डाक कर्मचारी दिवस आदि अनेक दिवस को अपने अंदर समाविष्ट किए हुए है जिसके कारण यह माह स्वत: ही विशिष्ट बन जाता है।

साहित्य प्रेमियों के समक्ष जुलाई माह के संस्करण को प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता है क्योंकि यह संस्करण साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से न केवल साहित्य प्रेमियों का ज्ञानवर्धन करता है अपितु मनोरंजन के साथ ही साथ नवीनतम जानकारियाँ भी प्रदान करता है।

इस संस्करण द्वारा प्रकाशित होने वाली प्रत्येक रचना अपने आप में एक अलग विशिष्टता को समाहित किए हुए है । पाठक वर्ग द्वारा प्रदान किया गया प्रेम एवं सुझाव संपादक मंडल हेतु प्रेरणा के साथ ही साथ उत्साहवर्धन का भी कार्य करता है जिससे भविष्य में प्रकाशित होने वाले नवीन संस्करण में त्रुटियों के शोधन एवं नए–नए आलेख एवं नवीन जानकारियाँ प्रदान करने हेतु हमारे मनोबल में वृद्धि होती है ।

अंत में संपादक मंडल समस्त आलेख लेखकों को हार्दिक आभार प्रकट करता हैं, जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय से कुछ समय इस पत्रिका को प्रदान किया । अत्यंत हर्ष एवं आनंद के साथ इस संस्करण को आप समस्त पाठक गण, विद्वत्त गण, सुधिजन तथा साहित्य प्रेमियों को सप्रेम अदा करते हैं ।

प्रधान संपादक

डॉ. संतोष कांबळे

'कौन–सी कविता होती है पूरी'.... में वर्णित विभिन्न विमर्श

डॉ. सुपर्णा मुखर्जी
सहायक प्रध्यापिका
भवंस विवेकानंद कॉलेज
सैनिकपुरी, हैदराबाद केंद्र
9603224004
drsuparna.mukherjee.81@gmail.com

शोध सार– कविता साहित्य की वह विधा है जिसके द्वारा मन की भावनाओं को छन्द, लय, ताल के द्वारा साहित्यकार प्रस्तुत करता है। कविता साहित्य की प्राचीन विधा है। एक समय ऐसा था जब केवल कोमलकांत भावनाओं को ही साहित्यकार व्यक्त किया करते थे लेकिन समय परिवर्तन के साथ–साथ कविता के कलेवर में भी परिवर्तन आया है। प्रोफेसर निर्मला मौर्य की कविता संग्रह 'कौन–सी कविता होती है पूरी'.... में कविता के इस नए कलेवर को देखा जा सकता है। आगे प्रस्तुत आलेख में प्रोफेसर मौर्य के कविता संग्रह में जिन नवीन विमर्शों को स्थान मिला है उनका विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

मूल पाठ

प्रोफेसर निर्मला एस. मौर्य 30 वर्ष के शोध निर्देशन का अनुभव आपके पास है। 60 से अधिक सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं और यू.जी.सी. द्वारा आयोजित रिफ्रेशर प्रोग्रामों के विषय विशेषज्ञ के रूप में इन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज कारवाई है। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से वे पुरस्कृत हुई हैं। जब वे कविता लिखने के लिए कवयित्री के पद पर आसीन होती हैं तब कविता लिखने के साथ ही साथ वे मानव जीवन के ऊपर शोध कार्य भी करने लग जाती हैं। उन्हें पता है, "मनुष्य का कार्यक्षेत्र बड़ी तेजी से बदल रहा है और कविता अपनी चारदीवारी से बाहर निकल कर विश्व के विशाल प्रांगण में कमर कस कर खड़ी हुई है। बदलती हुई संस्कृति में कविता लेखन की संस्कृति में भी तेजी से परिवर्तन हुआ है।"[1] उनके द्वारा लिखित कविता संग्रह 'कौन–सी कविता होती है पूरी'....में 51 कवितायें हैं। मनुष्य जीवन की

सम्पूर्ण भावनाओं को लेकर चलने वाली प्रस्तुत कविता संग्रह में कवयित्री ने पर्यावरण, मनुष्य जीवन, स्त्री विमर्श, राजनीति आदि सभी विषयों को लेकर सचेत हैं। इसी कारण से उनके प्रस्तुत कविता संग्रह में निम्न विमर्शों को देख सकते हैं–

पर्यावरण विमर्श– पर्यावरण विमर्श वर्तमान समय का महत्वपूर्ण विषय है। पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, पृथ्वी अपनी उत्पादन क्षमता खो रही है, धरती तो छोड़िए विशेषज्ञों की मानें तो आसमान के ओज़ोन लेयर का भी छिद्र बढ़ रहा है। ऐसे में साहित्यकार का दायित्व तो बनता ही है कि अब वह केवल प्रकृति के सुकोमल रूप पर बात न करें बल्कि यह भी लिखें कि–

"खोजा झरोखा, छोटा सा आंगन
दोनों थे गायब, हुई आनमनी–सी
किरणें समेटी, बढ़ी और आगे
दीवारें खड़ी थीं, इमारतें थीं ऊंची
नहीं खोलते थे अब लोग खिड़की
हवा, पानी और धूप मिले एक दिन
हवा सरसराई धीरे से फुसफुसाई
पानी को हिलाया लहरें उठाई।"[2]

हवा, पानी, धूप तो आज कंक्रीट के जंगल में बने हुए मकानों के कमरों तक पहुँच ही नहीं पाते हैं। मनुष्य तो यही सोचकर आनंदित है कि वह अपने घर के कमरे में सुरक्षित है लेकिन वास्तव में तो वह सुरक्षा के नाम पर कंक्रीट के जेल में बंद है। वातानुकूलित यंत्रों के कृत्रिम ठंडक से विषपान कर रहा है। 2024 की गर्मी में दिल्ली, नौएडा आदि शहरों में वातानुकूलित यंत्रों में विस्फोट होना कवयित्री की कविता की पंक्तियों को प्रासंगिक वातावरण के साथ जोड़ देता है। 11.6.2024 कोलकाता के पार्क स्ट्रीट का अग्निकांड भी तो ऐसा ही एक उदाहरण है। पेड़ों को काटकर, नदियों के मार्ग को बदलकर मनुष्य स्वयं ही अपने को प्रलय का स्वागत करने के लिए तैयार कर रहा है। मनुष्य तो इस सत्य को समझने के लिए तैयार ही नहीं है। पर साहित्यकार कैसे अपने दायित्व से विमुख हो सकता है? तभी तो कवयित्री ने मनुष्य को सचेत करने के लिए लिखा है–

"एक सपना बन जाएगी.. सपना बन जाएगी!
झरोखों से खेलती आंगन से उतरती

अठखेलियाँ करती सोने–सी धूप
कहां खो गई है?
शहरों की अट्टालिकाएं खा जाएंगी
धूप को
निगल जाएँगी ऊष्मा।"[3]

प्रकृति तभी बदहवास होती है जब मनुष्य अपनी सीमा का उल्लंघन करता है। दुख की बात यह है कि न तो मनुष्य सचेत है और न ही उसे अपनी गलतियों पर कोई पछतावा है। पर्यावरण विमर्श के अंतर्गत कवयित्री ने मनुष्य की बदहवासी को निम्न रूप में विश्लेषित किया है–

"मानव मन क्या कभी समझ पाएगा
कि सागर की लहरें कभी गीत गाती हैं
सीना तान लहरों ने मचाई तबाही
और
तोड़े तटबंध हैं
बह गए नगर गाँव छोटी छोटी बस्तियां
कहर ढाती सुनामी प्रलय बन आई है
मानव क्या कभी समझ पाएगा।"[4]

सुनामी ने यह सिद्ध कर दिया है कि अगर मनुष्य अपनी सीमा भूल जाए तो प्रकृति माँ बनकर संरक्षण प्रदान करती है तो प्रलय लाकर तांडव भी कर सकती है। इसलिए अब मनुष्य को सचेत होकर अपनी सुरक्षा के लिए प्रकृति का दोहन रोकना होगा।

पर्यावरण विमर्श के अंतर्गत 'यमुना' नामक कविता में 'यमुना' की सुंदरता को व्यंग्यात्मक शैली में विश्लेषित किया है–

"पक्षियों को जगाती यमुना बहती चली जाती है।
मन में संतप्त, तन से अकेली यमुना
लीलती सन्नाटा, भीड़ में अकेली
बहती चली जाती है बहती चली जाती है
मंद–मंद बहती यमुना की वेगवती धारा

अपने धवल वस्त्रों में मलिन –सी दिखती है॥"[5]

स्त्री विमर्श– स्त्री विमर्श और साहित्य दोनों साथ–साथ चलने वाले विषय हैं। गद्य साहित्य में स्त्री विमर्श के अंतर्गत मुख्यतया आर्थिक असमर्थता, लिंग भेद, हिंसा इन विषयों पर चर्चा की जाती है। पद्य साहित्य में भी इन विषयों को लयात्मक शैली में प्रस्तुत की जाती है लेकिन चूँकि गद्य की तुलना में पद्य कोमलकान्त पदावली को साथ में लेकर चलती है तो यहाँ स्त्री के सौंदर्य को मुख्य विषय के रूप में अपनाया जाता रहा है। कवयित्री ने भी स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री के माँ, बेटी आदि रूपों को रेखांकित किया है लेकिन उनकी उपमाएँ ध्यानाकर्षित करने वाली है। जैसे–

"पीपल और औदुंबर, पलाश, बरगद प्रतीक हैं चेतना के
बिटिया भी हैती है ऐसी ही,
वह
दादी के बूढ़े हाथों को थाम बिखेरती है दाने
रखती है संस्कारों की नींव"[6]

बिटिया के बचपन को दर्शाते समय कवयित्री में सुभद्राकुमारी चौहान के समान ही अपने बचपन को फिर से जी लेने की खुशी छलक रही है। बेटी का जन्म घर–घर में हो इस कामना के साथ वे लिखती हैं–

"तुम्हारी उटंगी फ्राक डगमगाते कदम
मुझे अंदर तक आनंदित कर जाते हैं
ऐ! मेरी नन्हीं परी ऐ!! एंजेल
मुस्कुराकर दरवाजे के पीछे छुप जाना
कभी ठुमकना कभी रूठ जाना
मेरी आत्मा को छू जाते हैं
बिटिया की किलकारी हो हर घर में बिटिया की
किलकारी हो।"[7]

स्त्री विमर्श के अंतर्गत जब कवयित्री स्त्री के 'माँ' रूप का विश्लेषण करती है तब 'माँ' की तुलना उन्होंने धरती के साथ करते हुए लिखा है–

"माँ धरती माँ जननी होती है।
वह जगाती है बालक में संवेदनाएं,

जगाती है निद्रा से.....
दूर करती है दुख और कष्टों को
माँ धरती होती है जननी होती है
इच्छाएं जगाती है खुशियाँ खिलाती है
घाव पर मरहम लगा बेचैनी भगाती है
माँ"[8]

'माँ' के बिना संतान अकेला है निम्न पंक्तियाँ इस विचार को व्यक्त करने में सक्षम है–

"हमें जीवन की धूप छांव से बचाती है
जीवन नैया की खेवैया बन
अनजान संसार–सागर से तारती है
माँ
इंद्रधनुषी छटा है
माँ"[9]

मानव अस्तित्व विमर्श– आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य भले ही महाकाश में अपने पैरों को जमा लिया है लेकिन धरती पर अपनों के बीच वह बहुत अकेला है। जीवन की आपाधापी में वह अपनी भावनाओं से भी विमुख है, सचेत कवयित्री अपने आसपास के वातावरण से अनभिज्ञ नहीं है। इसी कारण से उन्होंने लिखा है–

"पूनम की रात एक बार फिर आई है।
प्रेम का संदेशा लाई है
उड़ते अभिलाषाओं के रंग, फूलों की खुशबू
अब अजीब से लगते हैं
पूनम की मनभावन प्यारी–सी सुंदर–सी चांदनी में
नहायी रात काली हो जाती है
रोती है, काली हो जाती है।"[10]

मनुष्य इतना अकेला क्यों है? इस प्रश्न के अनेकों उत्तर है। उनमें से एक उत्तर यह भी है कि आज का मनुष्य अपनी संस्कृति से विमुख है, अपने गाँव, खेत, खलिहान से विमुख है। अपने जड़ों से विमुख होकर वह केवल भाग रहा है अंतहीन इच्छाओं के पीछे कुछ इस प्रकार से–

"तालाब में उठने वाली भंवरों की तरह
मन में अनेक प्रश्न
हथेलियों पर उग आते हैं कुकुरमुत्ते– से
कब ध्यान में धर्म आ जाता है, कौन जान पाता है?
उसे भोगना ही नियति जाती है, नियति बन जाती है।
गोबर और गेरू से लिपे–पुते
छोटे से घर के आँगन में
जब नीम सर–सराती है
झूमती है तो मानो बिखर जाते हैं संस्कारों के रंग।"[11]

संस्कारविहीन मनुष्य जीवन का क्या कोई अस्तित्व हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर हमेशा 'नहीं' होगा। कवयित्री का भी यही विचार है कि जीवन का लक्ष्य केवल साधन, संपत्ति, शक्ति कमा लेना नहीं होना चाहिए। इन सबको प्राप्त कर लेने के बाद भी अगर व्यक्ति सुखी नहीं है, स्वस्थ नहीं है तो उसका जीवन कदापि सफल नहीं कहला सकता। तभी तो वे लिखती हैं,

"यदि हमें मिल जाए थोड़ी सी चंचलता
क्या हो यदि हमें मिल जाए बारिश की मधुरिमा
तब
इच्छाएं झरना बन भिगों दें
सबका तन–मन
क्या हो यदि?
सपनों के पंख लग जाएं।"[12]

इन छोटी–छोटी आशाओं, सपनों का रहना आवश्यक है। नहीं तो, मनुष्य और यंत्र के बीच का अंतर ही समाप्त हो जाएगा। दुखद बात यही है कि ऐसा ही हो रहा है इसी कारण से मनुष्य, मानवताविहीन

है। यह मानव सभ्यता के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इस घातक अंधकार से मनुष्य को एक ऐसे सबेरे की तरफ आना होगा–

"जब हंसती हो सुबह
खिलखिलाता हो उजाला, तभी जानो आ जाएगा नया सवेरा
नदियों की धारा
झरनों का गाना, बारिश की रिमझिम,
जब आए समझ लेना तभी आ जाएगा नया सवेरा
सब अपने हैं, पूरे सपने हैं।"[13]

एक सार्थक, सुंदर जीवन का रूप–रंग ऐसा ही तो होना चाहिए।

राजनीतिक विमर्श– मानव अस्तित्व हो और राजनीति न हो ऐसा तो संभव नहीं है। जैसे मनुष्य साहित्य के केन्द्रबिन्दु में हमेशा से रहा है वैसे ही मनुष्य जीवन की घटनाओं को लेकर चलने वाली राजनीति भी अब साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। राजनीति का प्रधान उद्देश्य तो किसी समय देश सेवा, समाज सेवा आदि था। लेकिन अब राजनीति केवल देश सेवा, समाज सेवा आदि तक सीमित नहीं है। अब यह भ्रष्टाचार, धोखा, प्रताड़ना का भी माध्यम बन चुकी है। कवयित्री साहित्यकार के कर्तव्य से परिचित हैं तभी तो झूठी आशा कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने के स्थान पर निम्न कटु सत्य को दर्शाना उन्होंने उचित समझा है–

"ऐ! लड़की
जरा ठहर ––––––
चुनाव आ गए हैं जरा ठहरो चुनाव आ गए हैं,
तुझे भी बनाएंगे मुद्दा
कहीं सियासी दांव खेले जाएंगे
कहीं
नीति की धज्जियां उड़ाई जाएंगी
'ऐ! लड़की
जरा ठहर ––––––
चुनाव आ गए हैं।"[14]

आज की राजनीति की छवि कैसी है? इस प्रश्न का उत्तर पाना है तो निम्न पंक्तियों को तो पढ़ना ही पड़ेगा–

"पॉलिटिक्स का खेल बड़ा निराला है
कोई यहां आधा तो कोई पूरा नंगा है।
कोई भर–भर के अपनी जेबें पूरी तरह चंगा है
पॉलिटिक्स का ढंग बड़ा गंदा है
कोई खोजता कठौती में गंगा है
पॉलिटिक्स का ढंग बड़ा गंदा है।"[15]

राजनीति के भ्रष्ट रूप का दंश देश को ही झेलना पड़ता है। देश की एकता, स्वाभिमान, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता आदि पर इसका प्रभाव पड़ता है और सबसे अधिक प्रभावित होता है 'जनता का जीवन'। 'जनता' को यह समझ ही नहीं आता है कि क्यों वह अपने ही देश में असुरक्षित अनुभव कर रहा है? कवयित्री ने इन समस्याओं का नग्न चित्र अपनी कविता के द्वारा प्रस्तुत किया है–

"टेढ़े–मेढ़े घुमावदार रास्तों पर चलती
बड़ी तर्कहीन हो गई है
राजनीति
लिपटी पारदर्शी परत में
लोकतान्त्रिक बन मुस्कुराती है
राजनीति
अपने को समाजवादी कह
संगठन बना व्यंग्य से मुस्कुराती है
राजनीति।"[16]

कहना ही पड़ेगा कि कवयित्री केवल शिक्षाविद ही नहीं वरन देश की सजग नागरिक भी हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान है कि लोकतन्त्र में 'लोक' को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए। तभी तो कवयित्री आक्रोशित स्वर में प्रश्न पूछती हैं–

"हम अभी तक क्यों पड़े हैं नींद में?
आओ उचारें मंत्र अब जनतंत्र के

हिज्रे
गलत होने लगे अब मंच के
हादसे पलने लगे अब वतन में
आज रोटी की लड़ाई हो रही
अतृप्त आत्मा भटक रही बेचैन हो, हिज्रे गलत होने लगे
अब मंच के....."[17]

जब एक सचेत नागरिक, एक शिक्षाविद, एक कवयित्री निरपेक्ष रूप में इतने सामयिक विषयों को लेकर मंथन करते हुए लेखनी को हाथ में लेती है तब तो यह प्रश्न सार्थक हो ही जाता है कि 'कौन सी कविता होती है पूरी'..... नहीं ऐसी प्रासंगिक कवितायें कभी पूरी नहीं होती यही उनकी सुंदरता और सार्थकता का रहस्य है। आशा है निकट भविष्य में कवयित्री के विचारों के मंथन से और प्रासंगिक कविताओं का जन्म होगा।

संदर्भ सूची

1. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 5
2. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 27
3. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 8–9
4. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 83–84
5. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 49
6. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 32
7. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 28
8. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 36
9. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 104
10. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 93–94
11. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 95–96
12. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 85–86
13. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 87
14. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 64

15. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 34

16. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 50

17. कौन – सी कविता होती है पूरी.... पृष्ठ संख्या– 82

संदर्भ पुस्तक

प्रो. निर्मला एस. मौर्य– 'कौन –सी कविता होती है पूरी.....' प्रथम संस्करण– 2023

साहित्याकाश

दलित प्रतिशोध: पुतला

डॉ. लूनेश कुमार वर्मा (व्याख्याता)
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छछानपैरी
जिला रायपुर छत्तीसगढ़
luneshverma@gmail.com

सारांश– भारतीय समाज में जमींदारी प्रथा के अंतर्गत जमींदारों के द्वारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण किया जाता था। शोषण अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आम लोगों के मन में जो प्रतिशोध की भावना दहकती है, इसे अनुभव कर लेखक ने 'पुतला' कहानी का रूप दिया है। इस कहानी में अन्याय व शोषण का प्रतिकार 'पुतला' के रूप में किया गया है। इसमें गाँव के प्रभुत्वशाली व सूदखोर जमींदार के चरित्र को उजागर करती है। सूदखोर के जाल में फँसा आम आदमी जीवन भर गुलामी कर भी उससे मुक्त नहीं हो सकता है और न चाहते हुए भी उसकी सन्तति को उस कर्ज को चुकाना होता है। उदय प्रकाश समाज के वंचित वर्ग की समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से सामने लाने वाले महत्वपूर्ण कथाकार हैं। समाज में समर्थ लोगों के द्वारा असहाय और असमर्थ लोगों के वास्तविक अधिकारों को हड़पने, दबाने, कुचलने के दुराग्रहों को पूरी प्रतिबद्धता के साथ उजागर करते हैं। गैर दलित होने पर भी दलितों के जीवन की समस्याओं को अपने निकट अनुभव कर उन्हें रचनात्मक दिशा देने में वे सदैव अग्रणी रहे हैं।

मुख्य शब्द– जमींदारी प्रथा, शोषण, अन्याय, अत्याचार, प्रतिकार, प्रतिशोध।

उदय प्रकाश लिखित 'पुतला' दलित प्रतिशोध पर आधारित महत्वपूर्ण कहानी है। उदय प्रकाश ने समाज के वंचित वर्ग की समस्याओं को बहुत निकट से देखा व अनुभव किया है। वे सामाजिक यथार्थ का जीवंत चित्रण करने वाले मानवतावादी कहानीकार हैं। उनकी कहानियों के पात्र अपने समय और समाज के निम्न वर्ग के लोग हैं। लेखक ने हाशिए में जीने वाले लोगों के प्रतिरोध का चित्रण मानवीय स्पर्श और संवेदना पूर्वक किया है। कहानी बुनते हुए स्थितियों, पात्रों व भाषा का पूर्ण स्वतंत्रता से प्रयोग करने में उदय प्रकाश सिद्धहस्त हैं।

'पुतला' कहानी में सामंतवादी व्यवस्था और उसके विरुद्ध आम आदमी के प्रतीक समनू का वर्ग चरित्र प्रबल संघर्ष करता दिखाई पड़ता है। 'पुतला' कहानी उदय प्रकाश की दरियाई घोड़ा कहानी संग्रह में संकलित है। इस संग्रह पर टिप्पणी करते हुए धीरेन्द्र आस्थाना कहते हैं– ''दरियाई घोड़ा उदय प्रकाश के कहानीकार की उपलब्धि के बतौर गिनी जा सकती है, जिसमें रचा–बसा गहरा मानवीय स्पर्श, संवेदना और ताप आज के युवा कहानी की सामर्थ्य और ताजगी का बैरोमीटर माना जा सकता है।''[1] सामंतवादी व्यवस्था में किस तरह आम आदमी का शोषण पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहा है, का चित्रण इस कहानी में बड़ी कुशलता से किया गया है।

कथानक– गाँव का चौधरी भीखमदास के बंजर जमीन से होकर गाँव के भले के लिए सड़क बनना है। चौधरी खानदानी आबरू का सवाल बनाकर शासन से जा भिड़ता है और सड़क बनने नहीं देता है। इस जमीन पर प्रत्येक वर्ष खेलकूद, मेला, रामलीला आदि का आयोजन होता था। चौधरी का भाई हरसूप्रसाद इंदौर में सराफा व्यापार करता है। इस वर्ष अच्छी कमाई होने के कारण वह रामलीला हेतु तीन हजार रूपये देता है। जिससे इस वर्ष रामलीला का आयोजन खूब धूमधाम से हो सके।

रामलीला में चौधरी का ही प्रभुत्व रहता था। चौधरी का बेटा हरनारायण राम, पंडित गजाधर का भांजा नरेश प्रसाद हनुमान, मोची धनुख का लड़का समनू रावण और राधे कहार का मेघनाथ। राम–रावण युद्ध में जो बाण बांस की कमटियों को चीरकर बनाया जाता था जिसे चौधरी का बेटा बिना सोचे समझे कहीं भी निशाना लगा देता था। वह इसी तरह धनुष–बाण, गदा, मुष्टिका आदि का प्रहार करते हुए साल भर का खुंदक निकालता था। इन प्रहारों को सहते हुए समनू को अट्टहास करना पड़ता था।

चौधरी को जैसे ही पता चला कि पासी टोला के ठूनू पासी का लड़का किसनू पुतला बनाने में पारंगत है। वह उसे बुलवा कर पुतला बनाने कहता है। किसनु के मना करने पर वह उसके पिता द्वारा लिये गए सौ रूपये कर्ज की बात बताने लगा और 'बही' में उसके पिता का अंगूठा दिखाया। ''सौ रूपयों के पीछे वह बाईस वर्षों तक अपना हाड़ तोड़ता रहा, पसीना बहाता रहा, दिन–रात चौधरी के खेतों के साथ जूझता रहा, ईंट थापता रहा.... और आखिर में निचुड़–निचुड़ कर मर गया लेकिन मूलधन बना रहा। सूद तक अदा नहीं हुआ''[2] अब किसनु के सामने कोई विकल्प नहीं था क्योंकि चौधरी ने कह रखा था कि समय पर काम न हुआ तो उसका घर और उसकी जोरू की खैरियत नहीं। न चाहते हुए भी किसनु दिन–रात एक कर काम पर लग गया।

एक दिन चौधरी किसनु के काम को देखकर उसके साथ गाली–गलौज करने लगा था। किसनु बाप के नमक का लिहाज रखते हुए अपने काम में लगा रहा। अब उसकी बीड़ी–सिगरेट बंद कर दी गई। चौधरी के घर से बचा हुआ ठंडा खाना आता था। उसने अपने सोने के घंटे कम कर दिये। बीड़ी न मिलने पर उसकी अकुलाहट बढ़ जाती थी और पीने पर कुकुर खांसी आती।

दशहरे के दिन रात के अंधेरे में तीनों पुतले खड़े हो गए। जब रावण दहन हुआ तो लोगों ने किसनु की कलाकारी देखी। रावण के पुतले में चौधरी का चेहरा, कुंभकर्ण के पुतले में हरसूप्रसाद का और मेघनाथ के पुतले में.....। रावण का पार्ट करने वाला समनू का अट्टहास से आकाश गूँज उठा। जमींदारी व सूदखोरी के जाल में फँसा हुआ आम आदमी निरीह व असहाय होता है। ऐसे में उसके मन में असंतोष की भावना पनपती रहती है। 'पुतला' कहानी के किसनु के द्वारा शोषक वर्ग का पुतला दहन से प्रतिशोध लेकर संतोष का अनुभव करता है। हाशिए पर जीने वाले व्यक्ति के संघर्ष और प्रतिशोध की कहानी 'पुतला' में दिखाई देता है।

कहानी में पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। लक्ष्मी नारायण लाल कहते हैं–''पात्रों में व्यक्तित्व, भाव, संघर्ष और मानव के शाश्वत प्रश्नों की श्रृंखला गुँथी होनी चाहिए, अतः जो लेखक अपने पात्रों में जीवन की शक्तियाँ अंतर्द्वंद्व और शाश्वत प्रश्नों को भरता है, वह अपने पाठकों के हृदय में स्थायी रूप से स्थान कर लेता है। वे पात्र न केवल घटनाओं के जाल में ही खेलते हैं, किंतु पाठकों के अंतर्मन में प्रविष्ट होकर उनमें प्राण शक्ति का संचार भी करते हैं।''[3] कहानीकार कहानी में जो बातें कहना चाहता है, उसके योग्य चरित्र का चयन कहानियों की प्रमुख विशेषता है।

उदय प्रकाश की कहानियों के प्रमुख पात्र वर्गीय पात्र हैं। वर्ग का निर्धारण आर्थिक आधार पर किया जाता है। निम्न वर्ग के लोगों के जीवन में निर्धनता अभिशाप की तरह होती है। इसके कारण व्यक्ति समाज में रहते हुए भी अनेक समस्याओं का सामना करने के लिए मजबूर होता है। समाज में हर तरह से शोषण का शिकार होता है। उसे अभाव में अपना जीवन व्यतीत करना होता है, पल–पल अपमान व पीड़ा झेलने के लिए वह विवश होता है। सुरेंद्र चौधरी कहते हैं–''दरिद्र–वंचित और बीमार अनुभव करने वाले कथानायकों की कमी उदय प्रकाश की कहानियों में नहीं है।''[4] पहले सामंतवादी युग में जमीदारों व साहूकारों के द्वारा उनका शोषण किया जाता था, अत्याचार किया जाता था और आधुनिक पूँजीवादी समय में पूँजीपति वर्ग के लोगों के द्वारा इनका शोषण किया जा रहा है। गाँव हो या शहर सब जगह निम्न वर्ग के लोग शोषण का शिकार हो रहे हैं।

निम्न वर्गीय पात्रों में समाज के निम्न आर्थिक स्थिति वाले लोग आते हैं। इनका जीवन निम्न स्तर का होता है। समाज में उच्च वर्ग के लोगों के द्वारा इनका निरंतर शोषण किया जाता है। समाज में आर्थिक विषमता के शिकार इस वर्ग के पात्रों का जीवन अभाव, पीड़ा, घुटन और विवशता में व्यतीत होता है। इस वर्ग के लोग प्रायः अशिक्षित और रूढ़िवादी होते हैं। सदियों से जमीदारों और पूँजीपतियों के द्वारा इनका शोषण किया जाता रहा है। समाज में रहते हुए इन्हें सभी तरह के शोषण को सहना पड़ता है। किसनु, समनू जैसे पात्र इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। निम्न वर्गीय पात्रों के जीवन के संघर्ष हर्ष–विषाद, सुख–दुःख आदि भावों को लेखक इस प्रकार चित्रित करते हैं कि पात्र जीवंत प्रतीत होते हैं। पात्रों के चरित्र के विकास में परिवेश व परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण परिवेश में लिखी गई कहानियों के पात्र सीधे व सरल स्वभाव के हैं।

'पुतला' कहानी के पात्र किसनु व समनू निम्न वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र हैं। किसनु मूर्ति और पुतला बनाने की कला में निपुण है। चौधरी द्वारा रामलीला के लिए पुतला बनाने के लिए कहे जाने पर पहले तो वह मना करता है, किंतु सूदखोर चौधरी उसे उसके पिता द्वारा बाइस साल पुराने कर्ज की बात करने पर वह मना नहीं कर पाता है। दिन–रात एक कर पुतले बनाने के काम में जुट जाता है। काम के बीच चौधरी आकर उसकी गति देखकर दो–चार बातें सुनाता है। तब वह पलटकर कहता है– ''चौधरी जी, बहुत हो गया। बाप के नमक का लिहाज कर रहा हूँ, वरना एकाध बात ऐसी–वैसी जुबान से निकाल देता। आप चुपचाप देखते रहो, ये मेरा काम है। वक्त पर न बने तो कहना। जुता हुआ हूँ ...देह के जोर की भी तो कोई हद होती है।''[5] वह बीड़ी पीता था। जैसे ही वह बीड़ी का सुट्टा खींचता उसे कुकुरखांसी का दौरा सा पड़ जाता। लगता है जैसे वह मरने के लिए कलप रहा हो। आखिरी दिनों में वह एक मिनट भी नहीं सोया और रात के अंधेरे में ही उसने तीन पुतले खड़े कर दिए। जब पुतला दहन किया जा रहा था, तब लोगों ने देखा पुतलों में चौधरी, चौधरी के भाई व चौधरी के पुत्र का चेहरा नजर आ रहा था। इस तरह वह चौधरी द्वारा किये जा रहे शोषण व अत्याचार के विरुद्ध अपनी भावनाओं और द्वेष को पुतलों के माध्यम से व्यक्त करता है।

समनू अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता परिलक्षित होता है। धनुख मोची का लड़का समनू काला भुजंग है। इसे रामलीला में रावण का पार्ट करना पड़ता था। रामलीला में ही राम और हनुमान बने उच्च वर्ग के पात्र अपनी–अपनी खुंदक उस पर निकालते थे। बाण, तलवार, गदा, मुष्टिका प्रहार सहते हुए उसे अट्टहास करना पड़ता था। उसके अट्टहास में सिसकी और चीख की सुरंग से पझर कर आती हुई आवाज

होती थी। ऊँची भयावनी आवाज में अपने कंठ की पूरी ताकत के साथ की जाने वाली इन अट्टहासों में समनू व समनू जैसे लोगों के दर्द की पूरी दास्तान होती थी। किसनज पासी के बनाए पुतलों को जब अग्निबाण से जलाया जा रहा था, तब समनू ने जो अट्टहास किया उसमें सिसकी या चीख नहीं वरन एक उगलती हुई किलकारी की ध्वनियाँ थीं। सदियों से दबे–कुचले गये लोगों के प्रतिशोध की भावनाओं का उन ध्वनियों में समावेश था। 'पुतला' कहानी के चौधरी भीखमदास चौधरी भजनलाल जमींदारी प्रथा का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है। वह औरत से ज्यादा, जमीन की आबरू को मानता है। वह गाँव से शहर जाने वाले और वाली उसकी चौहद्दी से सड़क न निकालने की बात पर अदालत तक जा पहुँचता है। चौधरी भीखमदास चौधरी भजनलाल का बड़ा बेटा है। पिता के न रहने पर परंपरा से उसे ही चौधरी की पदवी प्राप्त हुई। चौहद्दी में हर साल होने वाले मेले, प्रदर्शनी व रामलीला में उसकी ही चलती थी। वहाँ से पैसों की वसूली करता था। पुतले बनाने के लिए हरसू परसाद द्वारा भेजे गये पैसों को बचाने के लिए वह किसनु पर दबाव डालकर उससे पुतले बनवाता है। इस तरह वह पैसों का लालची, कंजूस, सूदखोर और साम–दाम–दंड–भेद की नीति से अपना स्वार्थ साधने वाले चरित्र के रूप में सामने आता है।

इस कहानी के अधिकांश प्रमुख पात्र अपने समय व समाज के उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, असहाय किंतु स्थितियों से संघर्ष करने वाले हैं। अधिकांश पात्रों का प्रयोग उन्होंने प्रतीकों के रूप में भी किया है। उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र आम जीवन के पात्र हैं। वे संघर्ष करते हुए, अपने जीवन से हताश पीड़ित और पराजित प्रतीत होते हैं, फिर भी वे अपने मार्ग को त्यागते नहीं है। जीवन संघर्ष पथ पर सदैव अग्रसर रहते हैं।

उदय प्रकाश ने अपने समय के वास्तविक धरातल पर समाज में व्याप्त अंतर्विरोधों को 'पुतला' कहानी में अभिव्यक्त किया है। ''कहानीकार की सार्थकता इस बात में है कि वह अपने युग के मुख्य सामाजिक अंतर्विरोध के संदर्भ में अपनी कहानियों की सामग्री चुनता है।''[6] उदय प्रकाश अपनी कहानियों में गाली–गलौज वाले शब्दों से परहेज नहीं करते हैं। वे कहानी में प्रसंगवष अपने पात्रों के द्वारा ठीक उसी भाषा का प्रयोग करते हैं जैसे आम जीवन में कोई पात्र करता है। चाहे वह अश्लील हो या गाली–गलौज युक्त। वे असभ्य भाषा का भी खुलकर प्रयोग करते हैं। 'पुतला' कहानी में चौधरी भीखम दास किसनु को घूरता हुआ कहता है– "कान में खपच्ची खोंस रखी है क्या? चुxया समझ रखा है हमें? यही खोदकर गाड़ देंगे हxxxदे।"[7] पात्रों की भाषा आम आदमी की भाषा है। इसलिए सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग लेखक ने किया है।

शब्दों के माध्यम से किसी दृश्य की निर्मिती की जाती है तो यह बिंब कहलाता है। सी.एम. योहन्नान के अनुसार– "बिंब के द्वारा अभिव्यक्ति को अत्यंत सचिव एवं मार्मिक बनाने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है।"[8] कहानी में बिंब का प्रयोग वातावरण के वास्तविक स्वरूप को जीवंत बनाने के लिए किया जाता है। पुतला कहानी में किसनु पासी दशहरा के लिए पुतला बनाने के काम में जुटे हुए बीड़ी पीता था। बीड़ी पीते–पीते उसे कुकुर खाँसी आता था और वह फड़फड़ाने लगता था। उदय प्रकाश बिंब के माध्यम से कहते हैं– "उसने राधे से माँग कर बीड़ी का एक सुट्टा जैसे ही खींचा, उस पर कुकुरखाँसी का एक जानलेवा दौरा पड़ गया। लगा जैसे मरने के पहले वह कलप रहा हो। आँखें उलट गईं और उन पर राख जैसी परत चढ़ गई। चेहरा सफेद हो गया जैसे किसी ने सारा रक्त निचोड़ लिया हो। लगभग दस मिनट तक वह चौहद्दी के बीचो–बीच किसी गोली लगे जानवर की तरह फड़फड़ाता रहा।"[9] उदय प्रकाश की पहचान सशक्त कहानीकार के रूप में है, लेकिन वे मूलतः कवि हैं। इसलिए इनकी कहानियों में बिंब धर्मिता होना स्वाभाविक है।

कहानी में मुहावरों के प्रयोग से विलक्षणता आती है। उदय प्रकाश अपनी कहानियों में मुहावरों का सहज प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। वे इनका प्रयोग अपनी बात को विलक्षण ढ़ंग से प्रमाणित करने के लिए करते हैं। पुतला कहानी में वे कहते हैं– "जमाने की नजर और ईमान का क्या भरोसा, सुनने वाला कौन आदमी कैसा हो। सभी के पेट में जहर के दाँत होते हैं– ऊपर से कोई गिन नहीं सकता।"[10] पुतला कहानी में लेखक मुहावरे का प्रयोग करते हुए कहते हैं– "पता नहीं लौंडे के हाथ में कौन सा गुण है, जादू है कि बस माटी में प्राण फूँक देता है।"[11] पुतला कहानी में छोटेलाल किसानों के पास चौधरी भीखम दास का पुतला बनाने का आदेश लेकर गया था, लेकिन उसने मना कर दिया। इस प्रसंग को कहावत का प्रयोग करते हुए लेखक कहते हैं– "छोटेलाल सुंदर हो गया, नदी में रहकर मगर से बैर।"[12]

किसनु दलित मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जिस तरह मजदूरों के जीवन में संघर्ष चलते रहता है वैसे ही उसका जीवन भी संघर्षमय है। वह परिस्थितियों से भागता नहीं उस से टकराता है। यह वर्ग चेतना है जो कभी नष्ट नहीं होती है। कहानी में लेखक इसे मजदूरों के जीवन से जुड़ी वास्तविकता बताता है। निम्न वर्गीय लोगों में अत्याचार की प्रतिशोध की भावना तो होती है लेकिन प्रतिरोध नहीं कर पाते हैं। कहानी में किसनु जीते जी जो नहीं कर पाया वह चौधरी के रावण के रूप में पुतला बनाकर कर अपने साथ होने वाले अन्याय अत्याचार का बदला लेता है।

गाँव में रहने वाले आम आदमी का जीवन अत्यंत सादगी पूर्ण होता है। उसका खान–पान, रहन–सहन सब में उसकी सादगी झलकती है। 'पुतला; कहानी के नायक किसनु पासी के परिवेश के विषय में

वर्णन करते हुए उदय प्रकाश कहते हैं– ''किसनु पासी का घर गाँव के बाहर पोखर से लगा हुआ था। घर क्या था, मिट्टी का एक घरौंदा सा था जिसके छप्पर पर जंगल से काँस काट कर डाल दिया गया था। एक छोटी–सी कोठरी थी जिसमें मिट्टी के तेल की ढिबरी जल रही थी। पोखर के किनारे से मिट्टी खोदकर उसे सान लिया गया था और फिर थपाकर भीत खड़ी कर ली गई थी।''[13] गाँव में रहने वाले आम लोगों का मकान छप्पर आदि से ढका होता है।

'पुतला' कहानी में शोषित वर्ग के पात्र किसनु के माध्यम से शोषक वर्ग के प्रति प्रतिशोध की भावना को व्यक्त किया गया है। किसनु प्रतिशोध के लिए रावण के पुतले में रावण के चेहरे के स्थान पर चौधरी भीखमदास का चेहरा बना दिया था। इसके माध्यम से समाज के प्रत्येक वंचित वर्ग के लोगों की पीड़ा व शोषण के विरुद्ध स्वर बुलंद किया गया है। इनमें समाज के प्रत्येक वंचित वर्ग जिसमें अनुसूचित जाति, जनजाति, दलित, स्त्री आदि समाहित हैं। इनके प्रति पूरी सहानुभूति से इनका पक्ष लेते हुए पूरी संवेदना से इनकी पीड़ा और समस्याओं को इस कहानी के माध्यम से स्वर दिया गया है।

उदय प्रकाश ने दलित, दमित, व्यवस्था से पीड़ित, प्रताड़ित व सताए हुए लोगों को अपनी इस कहानी का प्रमुख पात्र बनाया है। ये वे लोग हैं, जिन्हें समकालीन स्थितियों ने अपना साधारण जीवन भी जीने नहीं दिया। उदय प्रकाश की कहानियों के केंद्र में निम्न मध्यवर्गीय दलित, पीड़ित, शोषित व दुःखी लोगों का जीवन रहा है। इनकी कहानियों के अधिकांश केंद्रीय पात्र वंचित व अपने चारों ओर से ठगे हुए, हताश व पीड़ित लोग रहे हैं।

उदय प्रकाश की प्रतिबद्धता किसी विचार के प्रति न होकर आम आदमी जो अशक्त है, कमजोर है, सामाजिक अन्याय व दबाव से जिसका जीवन गिरा हुआ है, जो व्यवस्था का मारा हुआ, सताया हुआ, पीड़ित किया हुआ, अपने अधिकारों से वंचित किया हुआ है, के प्रति है। 'पुतला' के केंद्र में दलित, दमित, शोषित की पीड़ा, संघर्ष एवं उनकी दयनीयता का चित्रण है। शोषक के प्रति शोषित वर्ग का प्रतिशोध चित्रण इस कहानी में किया है।

निष्कर्ष– दलित सदियों से उच्च वर्ग के शोषण का शिकार होता आया है। समकालीन समय में भी 'किसनु' जैसे लोग पर्याप्त योग्यता रखते हुए भी शोषण के शिकार हो रहे हैं। स्थिति यह भी होते जा रही है कि वे अपनी पहचान व अस्मिता खोकर भी ठीक ढंग से खुली हवा में सांस नहीं ले पा रहे हैं। शासन पक्ष से आरक्षण आदि की व्यवस्था होने पर भी दलितों के साथ अन्याय का दौर थम नहीं रहा है। उचित योग्यता होते हुए भी सिफारिश, जालसाज, गुंडागर्दी और अत्याचार के कारण इन्हें अपना अधिकार नहीं मिल पा

रहा है। समाज के बाहुबली लोगों के द्वारा निरंतर इनका वास्तविक अधिकारों से वंचित कर शोषण किया जाता रहा है। आज पूरा राजनीतिक, सामाजिक पूरी व्यवस्था इस तरह भ्रष्ट हो गई है कि किसनु जैसे आम आदमी को अपनी अस्मिता व पहचान बनाए रखना अत्यंत कठिन हो गया है।

संदर्भ–

1. उदय प्रकाश. अपनी उनकी बात. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण : 2013, आवरण पृष्ठ.
2. उदय प्रकाश. दरियाई घोड़ा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन संस्करण : 2010. पृष्ठ 78.
3. लाल, लक्ष्मी नारायण. हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन. संस्करण: 2019, पृष्ठ 224.
4. चौधरी, सुरेंद्र. हिंदी कहानी रचना और परिस्थिति. गाजियाबाद: अंकिता प्रकाशन. संस्करण: 2009, पृष्ठ 267.
5. उदय प्रकाश. दरियाई घोड़ा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण: 2010, पृष्ठ 79.
6. नामवर सिंह, कहानी नई कहानी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन. संस्करण: 2012, पृष्ठ 28.
7. उदय प्रकाश. दरियाई घोड़ा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण: 2010, पृष्ठ 79.
8. योहन्नान, सी.एम. समकालीन हिंदी कहानी: अंतरंग परिचय. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन. संस्करण: 2013, पृष्ठ 174.
9. उदय प्रकाश. दरियाई घोड़ा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण: 2010, पृष्ठ 81.
10. वही पृष्ठ 74.
11. वही पृष्ठ 74.
12. वही पृष्ठ 76.
13. वही 75.

"भोलाराम का जीव" रचना में चित्रित सामाजिक व्यंग्य

सारिका शंकरराव धुमाळ
पीएच.डी. शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,
Mail id – rajashreedhumal8@gmail.com
Ph. 9284524103

शोध सारांश –

'भोलाराम का जीव' कहानी में व्यंग्य का मुख्य लक्ष्य सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था है। लेखक हरिशंकर परसाई का उद्देश्य केवल इतना ही नहीं है साथ ही साथ उसका उद्देश्य व्यंग्य को मानवीय त्रासदी और करुणा तक ले जाना है। परसाई यह दिखाना चाहते हैं कि इस व्यवस्था में मनुष्य की क्या हालत हो चुकी है? भ्रष्टाचार समूचे विश्व को लगा एक रोग है। देश को मिली आजादी के बाद लोगों ने चैन की सांस लेने की सोची थी पर सरकारी कर्मचारियों ने अंग्रेज अधिकारी के समान समाज में गरीब तथा पीड़ित वर्ग का शोषण करने का कार्य निरंतर जारी रखने का जिम्मा उठाया है। इसी भ्रष्ट राजनीतिक दलों के व्यवहार का हुबहू चित्रण भोलाराम का जीव के माध्यम से किया है।

अपने युग की विसंगतियों को बड़ी गहराई से हरिशंकर परसाई ने खोजा है। व्यंग्य लेखन के माध्यम से उनकी कहानियों में आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो, लेखन में कहानियों के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगतियों पर ज्यादा दृष्टि से लेखन किया है ऐसा प्रतीत होता है। हरिशंकर परसाई के लेखन साहित्य में अन्य लेखकों की तुलना में सूक्ष्म व्यंग्य का कुशल प्रयोग बड़ी सहजता से किया दिखाई देता है। अपनी रचना में अपने जीवन के सामाजिक दायित्व को समझते हुए सामाजिक जीवन का चित्रण अपने रचना में करते दिखाई देते हैं।

'भोलाराम का जीव' एक कहानी ऐसी है जहा पूरी भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को सरकारी कर्मचारीयोंके व्यवहार के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य में हरिशंकर परसाई एक व्यंग्य साहित्य लेखन करने वाले प्रमुख लेखक के रूप में उभरकर सामने आते हैं। श्रीलाल शुक्ल के साथ–साथ हरिशंकर परसाई का नाम व्यंग्य साहित्य विधा में बड़े पैमाने पर लिया जाता है। यह विधा सबसे पहले अंग्रेजी साहित्य में से शुरू हुई है ऐसा माना जाता है। हरिशंकर परसाई ने हिंदी साहित्य में इस विधा के माध्यम से हिंदी साहित्य को एक नई पहचान दी। अपने लेखन को माध्यम बनाकर हास्य व्यंग्य के साथ समाज में विविध विषयों पर प्रकाश डाला हैं। व्यंग्य साहित्य की यही विशेषता होती है की समाज के विविध पहलू को उजागर करना, हँसी मजाक के माध्यम से समाज के गहरे तथा दुर्लक्षित विषयों पर प्रकाश डालना। "भोलाराम का जीव" कहानी के माध्यम से पूरी समाज व्यवस्था और राजनीति व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार के माध्यम से कैसे गरीब जनता तथा परिवार में समस्या निर्माण होती है। सामान्य जनता इस भ्रष्ट व्यवस्था में किस तरह लाचार तथा मजबूर है यहीं दिखाने का प्रयास नारद के पात्र के माध्यम से दिखाई दिया हैं।

बीज शब्द– सामाजिक, राजनीतिक, व्यंग्य, भ्रष्टाचार, पेपरवेट, विसंगतियां, सरकारी दफ़्तर, वैरागी आदि।

हरिशंकर परसाई की अन्य कहानियाँ–

"मौलाना का लड़का", "राग– विराग", "सदाचार का ताबीज", "मुंडन", "भोलाराम का जीव", "एक तृप्त आदमी की कहानी", "मैं हूँ तोता प्रेम का मारा", और "सत्य साधक मंडल" चर्चित कहानियाँ हैं सभी कहानियों में सामाज में चित्रित सामाजिक तथा राजनीतिक व्यंग्य का चित्रण व्यापकता से दिखाई देती है।

"भोलाराम का जीव" कहानी में चित्रित सामाजिक व्यंग्य –

"भोलाराम का जीव" कहानी हरिशंकर परसाई की अन्य कहानियों की तुलना में अधिक सूक्ष्म राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करती कहानी के रूप में सामने आती है। अपने तत्कालीन समाज की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण लेखक अपनी लेखनी के माध्यम से आने वाले समाज के सामने रखने का प्रयास करते हैं।

हरिशंकर परसाई की लेखनी में तत्कालीन युग की विसंगतियों का सूक्ष्म चित्रण किया दिखाई देता है। हरिशंकर परसाई की मान्यता है कि, "सच्चा व्यंग्य जीवन की समीक्षा होता है। वह मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करता है। अपने से साक्षात्कार करता है। चेतना में हलचल पैदा करता है और जीवन में व्याप्त मिथ्याचार, पाखंड, असमंजस्य और अन्याय से लड़ने के लिए उसे तैयार करता है।"[1] "भोलाराम का जीव" कहानी में चित्रित पात्र भोलाराम के पेंशन के मामले को सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार को सामने रखते हुए पाठक के मन में बड़ी गंभीरता से विचार करने के लिए मजबूर किया है। भोलाराम जो की मर चुका है.. फिर भी उसका जीव अभी तक धर्मराज के दरबार में पहुंचा नहीं है तो सभी हैरान हो गए है। मरने के बाद भी जीव कहा अटका पड़ा है यह समस्या सभी धर्मराज के दरबारियों को सता रही है। भ्रष्ट समाज व्यवस्था पर प्रकाश डालने का कार्य चंद्रगुप्त करता है। चंद्रगुप्त जो धर्मराज के दरबार में काम करता है जो खुद पढ़ा लिखा है। "महाराज आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चल रहा है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वह रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। होजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं, मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं।"[2]

मृत्युलोक के सामाजिक व्यवस्था के साथ साथ चंद्रगुप्त के मन में सवाल पैदा होता है की क्या स्वर्गलोग में धर्मराज के राजदरबार में ऐसी व्यवस्था हो सकती है तो खुद चंद्रगुप्त मृत्युलोक की सामाजिक व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं किंतु खुद चंद्रगुप्त मान लेता है की ध्यान देने वाली बात यह कि धर्मराज शिफारिश के आधार पर स्वर्गलोक या नरक मे स्थान अलोट करने लगे तो मृत्यूलोक मे यह जो चल रहा है वह सब आम बात है। जिस समाज व्यवस्था से खुद देवी देवताओं का राजदरबार स्वर्गलोक बच ना सका तो मृत्युलोक पर यह आम बात है।

भोलाराम अपने सेवा समाप्ति के बाद पेंशन के लिए हर बार और बार–बार सरकारी दफ़्तर के चक्कर काटता रहा। किंतु भरी वजन अर्थात पैसे न देने के कारण उसकी फाइल धूल खाते पड़ी रही। भोलाराम मर जाता है किंतु उसका जीव उसी फाइल में अटका रहता है। जो धर्मराज के दरबार में न पहुँचने के कारणवश हड़बड़ी मच जाती है। खुद नारद भोलाराम के जीव का शोध करते–करते पृथ्वी पर पहुँच जाता है। घर जाकर उसके परिवार से बातचीत के बाद नारद को पता चलने पर दफ़्तर में जाने के बाद खुलासा हो जाता है। समाज में फैली रिश्वतखोरी को सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार से और बातचीत से पता चलता है।

जहाँ खुद नारद को अपनी वीणा तक गिरवी रखनी पड़ती है। समाज में फैली रिश्वतखोरी को बहुत करारा व्यंग्य के साथ कहानी में रखा गया है। हास्य के साथ–साथ हरिशंकर परसाई अपने मूल उद्देश्य को पूरा करते हैं।

दफ़्तर के बाबू ने उन्हें ध्यान पूर्वक देखा और बोला– "भोलाराम ने दरखास्त है तो भेजी थी पर उन पर वजन नहीं रखा था इसलिए कहीं उड़ गयी होगी।"[3] वजन रखने का सीधा और सरल अर्थ रिश्वत या पैसों से था। आज भी सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार में यह बात अनोखे तरीके से की जाती है। चाहे उनके लिए अलग–अलग शब्दों का नाम दिया गया हो किंतु उनका मूल उद्देश्य एक ही होता है। सरकारी दफ़्तर में चपरासी से लेकर साहब तक सभी की एक माला होती है जो इसमें शामिल होते हैं।

सरकारी दफ़्तर के प्रसंग के माध्यम से समाज में किस तरह से भ्रष्टाचार फैला है इसका अंदाजा हम लगा सकते। चपरासी ने कहा महाराज आप क्यों इस झंझट में पड़ गए। अगर आप साल भर भी यह चक्कर लगाते रहें तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधा बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा।"[4]

"साहब बोले आप है वैरागी, दफ्तरों के रीति–रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की भाई, यह भी एक मंदिर है। यह भी दान पुण्य करना पड़ता है भेट चढ़ाने पड़ती है आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं भोलाराम की दरखास्त से उड़ रही है उन पर वजन रखिए।"[5]

आज भी सरकारी कामकाज से सेवा समाप्ती के बाद पेन्शन के लिये सामान्य लोग दफ्तर के चक्कर लगाते है किंतु बिना पैसों के काम नहीं होता है। इतना होने के बाद भी सरलता और ईमानदारी से काम करने वालों की कमी के कारण लोगों की जान तक जाती है किंतु फाइल आगे पहुंच नही पाती। घर वाले जो भोलाराम के पेंशन के पैसों से गुजरा करना चाहते हैं वह भी समझ नही पाते की किस तरह काम पूरा किया जाय और पेंशन चालू हो जाए।

लेकिन यहां तो खुद भोलाराम का जीव उस फाइल में अटका पड़ा है। जो नारद के आने के बाद खुलासा होता है की भोलाराम का जीव कहा छिपा है। सहसा फाइल से आवाज आयी कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमन है क्या? पेंशन का आर्डर आ गया"[6]

"नारद ने कहा, मे नारद हूँ। मैं तुम्हे लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग मे तुम्हारा इंतजार हो रहा है। आवाज आयीं मुझे नही जाना। मैं तो पेन्शन कि दरखास्तों में अटका हूँ। यही मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरखास्त छोडकर नही जा सकता।"[7]

इस तरह से हमें भोलाराम का जीव कहानी के माध्यम से हरिशंकर परसाई ने सामाजिक हास्य व्यंग्य के माध्यम से तत्कालीन समाज का चित्रण किया है। ऐसी कहानी को माध्यम बनाकर व्यंग्य के आधार पर लेखक हरिशंकर परसाई उन्होंने अपने लेखन जगत के हिंदी साहित्य में अलग पहचान बनाई है। व्यंग्यकार मार्क ट्वेन ने व्यंग्य की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए लिखा है– "व्यंग्य मानव शांति से पैदा होता है वह मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना चाहता है।"[8]

लेखक आपने जीवन में घटित प्रसंगों के माध्यम से समाज में फैली तत्कालीन समस्या की सीख देता है। कहानी को माध्यम बनाकर परंपरा से सदियों से चलती आ रही भ्रष्टाचार की समस्या को हास्य व्यंग्य के माध्यम से "भोलाराम का जीव" कहानी के माध्यम से सामाजिक व्यंग्य के रूप में रखा हैं। जो आने वाले पीढ़ी सदियों तक एक तत्कालीन समस्या के रूप में चलती रहेगी।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है की "भोलाराम का जीव" कहानी में व्यंग्य की तीखी मार स्पष्ट झलकती है। सामाजिक विसंगतियों के साथ–साथ प्रशासन स्थल पर व्याप्त भ्रष्टाचार को केंद्र में रखा गया है सरकारी कार्यालय में भ्रष्टाचार, लापरवाही और सिफारिश का जो आलम है उसे व्यंग्य और विनोद का सहारा लेकर बताया है। 'पेपरवेट' जैसे शब्दों के माध्यम से उन्हें और भी स्पष्ट रूप दिया गया है। सामाजिक विसंगतियों के साथ–साथ प्रशासनिक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार को केंद्र में रखा है। अपने आसपास जुड़े महत्वपूर्ण सवालों को ज्यादा रस लेकर लेखक हरिशंकर परसाई ने जीवन की समस्याओं को उजागर करते हैं सरकारी कार्यालय में भ्रष्टाचार, लापरवाही और सिफारिश का जो आलम है उसे व्यंग्य विनोद के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। "भोलाराम का जीव" धर्मराज के दरबार में प्रस्तुत नहीं हो पाता है। उसके पेंशन की दरखास्तों के बीच अटका पड़ा है। यह आज के सामाजिक स्थिति के रूप में भी सौ प्रतिशत लागू होता है। जो आने वाली हर पीढ़ी तक चलता रहेगा। जब तक इस समाज से भ्रष्टाचार समूल नष्ट नहीं हो जाता। तब तक समाज में ऐसे भोलाराम के जीव अनेक सरकारी दफ़्तर के फाइल में अटके पड़े दिखाई देंगे।

संदर्भ

1) तिरछी रेखाएं, 'गर्दिश के दिन' (आत्मकथ्य) हरिशंकर परसाई, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 26
3) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 31
4) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 31

5) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 31
6) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 32
7) eGnyankosh.htt:/www.egyankosh.ac.in (internet) के pdf फाईल से पृष्ठ– 33
8) तिरछी रेखाएं, 'गर्दिश के दिन' (आत्मकथ्य) हरिशंकर परसाई, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में यथार्थवादी स्वर

*** डॉ. रवींद्र पुंजाराम ठाकरे**
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला,
जिला–नाशिक (महाराष्ट्र)
ई–मेल : ravipthakare@gmail.com

**** प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे**
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगांव, जिला–नाशिक (महाराष्ट्र)
दूरभाष: 9822916518

प्रास्ताविक :

साहित्य की प्रत्येक विधा में समाज का प्रतिबिंब परिलक्षित होता है । प्रत्येक विधा का अपना एक रूप है, जिससे उसकी अलग पहचान बनती है । ग़ज़ल इसका अपवाद नहीं है । उर्दू से हिंदी में आई गज़लें नए तेवर धारण किए हुए हैं । हिंदी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल को यथार्थवादी स्वर देकर उसे जनचेतना से जोड़ा है । इसमें दुष्यंत कुमार का नाम शीर्षस्थ है । दुष्यंत कुमार हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें हिंदी साहित्य की अनूठी धरोहर हैं । उनकी ग़ज़लें व्यक्तिगत पीड़ा एवं सामाजिक विषमताओं की देन है । उन्होंने हिंदी गज़ल को परंपरागत रूप से बाहर निकालकर समसामयिक जीवंत संदर्भों से जुड़ा है । दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल को नया मोड़ दिया है । उनकी ग़ज़लों में अभिव्यक्त पीड़ा स्वानुभूत है । ग़ज़ल को उन्होंने तथाकथित महलों, दरबारों से निकालकर तथा हुस्न–इश्क के क्षेत्र से हटा कर आम आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनाया । आम आदमी की विवशता, संघर्ष, घुटन, कुंठा, राजनीतिक षड्यंत्र, सर्वहारा का शोषण, परिवर्तन एवं क्रांति की जरूरत आदि को दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से बयान किया है ।

उनकी ग़ज़लें धर्मयुग, साप्ताहिक, हिंदुस्तान, सारिका, प्रतीक, कल्पना आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। यही रचनाओं को पुस्तक के रूप में सन् 1975 में 'साए में धूप' नाम से प्रकाशित किया गया। यह दुष्यंत कुमार का अंतिम ग़ज़ल संग्रह हैं, जिसमें कवि ने 52 ग़ज़लों को प्रस्तुत किया है। इस तरह सन् 1957 से 'सूर्य का स्वागत' करने वाले कवि ने 'चलो यहां से कहीं और यहां दरख्तों के साए में धूप लगती हैं' कह कर अपनी काव्य यात्रा का समापन किया है। समसामयिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल विधा को अपनाया। "साठोत्तरी युग के ग़ज़लकारों में दुष्यंत का नाम सर्वप्रथम आता है। समसामायिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए दुष्यंत कुमार ने गज़ल की सहजता को स्वीकारा। सामाजिक स्थिति, भ्रष्टता, पिछड़ी जनता, बदलती मानवीयता,बेकरी विचारों की विसंगति, दो मुहाँपन, निद्राग्रस्त राजव्यवस्था, महंगाई, बेरोजगारी, जीवन का यांत्रिकीकरण, भूख, गरीबी आदि बातों को दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया। हिंदी ग़ज़लकारों ने सामाजिक विसंगतियों को व्यंग्यात्मक शब्द में व्यक्त किया है।"[1]

पहली बार दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल के परंपरागत ढ़ांचे को तोड़ने का साहस किया और उसे परिवेशगत आयाम दिया। उनकी ग़ज़लों में वर्तमान मनुष्य की पीड़ा एवं विडंबनाओं को स्थान दिया गया है। इन ग़ज़लों में सर्वत्र आक्रोश झलकता है। यह आक्रोश केवल व्यवस्था के प्रति ही नहीं है अपितु शासकों के भ्रष्ट आचरण के प्रति भी है। दुष्यंत ने अपनी प्रतिबद्धता समाज के प्रति रखी है। समाज में बसने वाले लोग और उनकी हर समस्याएं दुष्यंत की अपनी समस्याएं बन कर प्रामाणिकता के साथ इन गजलों में अभिव्यक्त हुई हैं। वर्तमान समय में जो संकट है, उसे दुष्यंत ने अपनी भावुक शैली में व्यक्त किया है। आम आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने के संदर्भ में दुष्यंत कुमार ने अपनी पैनी दृष्टि से उसके दुख और दर्द को पहचाना और जीवन से जुड़ी वास्तविकता का यथातथ्य निरूपण किया है। वे लिखते है,–

"कहां तो तय था चिरागां हर एक घर के लिए, कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।"[2]

भारत देश की जनता वादों पर जीती है। इस भोली–भाली प्रजा को मीठे वचन देकर बड़े–बड़े वादे दिए जाते हैं किंतु होता कुछ और ही है। प्रजा की पीड़ा वही की वही रह जाती है और नेता दिन दुगनी उन्नति कर जाते हैं। इस भ्रष्ट प्रशासन और व्यवस्था के प्रति दुष्यंत के हृदय में तीव्र क्षोभ है; जो उनकी कलम द्वारा व्यक्त होता है। कवि का मानना है कि, वर्तमान विकट स्थिति में आम आदमी अत्याधिक सस्ता हो गया है। उसका उपयोग केवल चुनावी सत्ता बनाने के लिए किया जाता है। वह व्यवस्था के दुष्चक्र में पीसा जा रहा है। राजनीतिक षड्यंत्र में फँसे मनुष्य को आगे कोई भविष्य नजर नहीं आता। वह बिना मुह

खोले सब कुछ बर्दास्त कर लेता है । उसे रहने के लिए घर नहीं है तो वह फुट पाथ पर सो लेगा, खाने के लिए रोटी नही मिली तो पाणी पी कर जी लेगा । उसके बच्चे नंगे, अशिक्षित, फटे हाल घुमेंगे फिर भी वह कुछ नहीं कर सकता । आम आदमी की प्रतिकार करने की भावना तथा अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने की शक्ति क्षीण हो गई है । दुष्यांत कुमार यह देखकर संतप्त हो जाते हैं । उनकी वाणी मौन नहीं रह सकती, वे कह उठते हैं–

"न हो कमीज़ तो पांवों से पेट ढक लेंगे, ये लोग कितने मुनासिब हैं, इस सफर के लिए ।"[3]

दुष्यांत कुमार सर्वहारा की विसंगतियों को बेपर्दा करने वाले ग़ज़लकार हैं । वर्तमान समय में समाज में इतनी गरीबी बढ़ गयी है कि लोग अपना तन ढकने के लिए कपड़ा खरीदने में भी सक्षम नहीं है । बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी में रोटी, कपड़ा और मकान जैसी अत्यावश्यक जरूरतों को पूरा करने में वह असमर्थ होता नजर आता है । अपने शरीर को शरीर के ही दूसरे अंगों से ढक लेने तथा अभिशप्त जीवन जीने को अपना मुकद्दर मानने वालें आम आदमी की पीड़ा पर कवि खीज उठते हैं–

"यहा दरख्तों के साये मे धूप लगती है, चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिए ।"[4]

दुष्यंत कुमार सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक वैषम्य को बेनकाब करते हैं । उनकी ग़ज़लों में सर्वहारा के शोषण, पराजय, दैन्य, उत्पीड़न और दूर्व्यवस्था की निर्भीक अभिव्यक्ति हुई है । उनकी आस्था का केंद्र ईश्वर नहीं बल्कि मनुष्य है । वे राजनीतिक षड्यंत्र और राजनेताओं की दोगली भूमिका को बेबाकी से तोड़ते हैं । इस संदर्भ में डॉ. ग. तु. अष्टेकर लिखते हैं,– "कवि दुष्यंत कुमार जब राजनीतिक स्थिति के बारे में सोचते हैं तो बेहद अप्रिय किंतु सच्ची बातें कह जाते हैं । अपने समय के मुल्क की बेहाली को बेबाक शब्दों में लिख जाते हैं ।"[5] दुष्यंत कुमार उस काल के कवि हैं, जब देश अस्थिरता से गुजर रहा था । स्वतंत्रता के बाद तत्काल ही सब कुछ ठीक नहीं हुआ था । स्वतंत्रता पाने के लिए देश को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी । साम्प्रदायिक फसादों ने आग पकड़ ली थी । भारत–पाक, भारत–चीन युद्ध हो चुके थे । महात्मा गांधी की हत्या हुई थी । स्वतंत्रता की लहर आंसू में विलीन हो गई थी । कवि दुष्यंत कुमार किसी भी दल या पार्टी से संबंधित नहीं थे । अत: उन्होंने अपने देश की और आम आदमी की दुर्दशा का वर्णन अत्यंत निर्भीकता से किया है, जो बड़ा ही सटीक बन गया है,–

"खुदा नहीं, न सही, आम आदमी का ख्वाब सही, कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिए ।"[6]

दुष्यंत कुमार बिगड़ी हुई परिस्थिति को संघर्ष करके सुधारने में विश्वास रखते हैं । इसलिए बिना लाग लपेट के खरी–खरी सुना देते हैं । जहां खड़े हैं वहीं से शुरु हो जाते हैं । कमीज ना होने पर पाव से

शरीर ढकने की मानसिकता के प्रति वे लोगों को जागृत करते हुए यथार्थ की धरा पर खड़ा करते हैं । अगर खुदा ना मिले ना सही एक हसीन नजरा भी जीने के लिए काफी है, इस बात से आम आदमी में आशावाद निर्माण करते हैं । तथा आम आदमी में विद्यमान कायरता और अविश्वास, डर आदि कमियों को बाहर निकाल फेंकते हैं । "दुष्यंत कुमार आशावादी कवि हैं उन्होंने केवल कमियों को दर्शाया नहीं अपितु उसके समाधान भी प्रस्तुत किए हैं । मनुष्य चाहे तो कुछ भी कर सकता है, असंभव को संभव बनाने के लिए सच्ची लगन तथा प्रयास की आवश्यकता है ऐसा कवि निरंतर कहते हैं । कवि ने आम आदमी में चेतना जागृत करते हुए परिवर्तन की स्थिति का सामना करने का आह्वान किया है ।"[7]

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें जीवन के यथार्थ को बयान करती है । जीवन की आपाधापी में उनकी ग़ज़लें अनायास याद आ जाती हैं । विडंबनाएँ उनकी ग़ज़लों में इस तरह व्यक्त हुई है कि आम आदमी को वह अपनी आवाज लगने लगती है । दुष्यंत कुमार की ग़ज़लें समय को समझने और उससे लड़ने की ताकत देती है । वे कठिन समय को समझने के लिए शास्त्र और उनसे जूझने के लिए शस्त्र की तरह है,–

"वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए ।"[8]

यहां दुष्यंत कुमार ने भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति करारा व्यंग्य किया है । आपातकाल के बाद भारतीय जनमानस में जो मोहभंग की स्थिति आई उस तानाशाही पर ग़ज़लकार ने करारी चोट की है ।

भारत आजाद हुआ तब आम आदमी ने यह ख्वाब देखे थे कि, अब जनता का राज होगा । परंतु आपातकाल के लागू होते ही आम आदमी के अधिकारों पर पाबंदी लगा दी गई । भ्रष्ट नेताओं ने आम आदमी का शोषण आरंभ कर दिया । स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण देश के विकास को दरकिनार कर दिया गया । कवि दुष्यंत कुमार ने इस तानाशाही व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया है,–

"जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले, मरे तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए ।"[9]

दुष्यंत कुमार मानवतावादी कवि हैं । उनकी गज़लों में राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति का स्वर मुखर हुआ है । मनुष्य एवं मनुष्य जीवन में आस्था रखने वाले कवि दुष्यंत कुमार को जहां कहीं भी मानवता विरोधी बातें दिखाई देती हैं, उसके खिलाफ जोरदार विरोध व्यक्त करते हैं । वे हमेशा दूसरों के लिए जीना चाहते हैं । मानव के जीवन की पीड़ा को उन्होंने पूर्ण प्रामाणिकता के साथ रेखांकित किया है । दुष्यंत कुमार देश की अखंडता और एकता में विश्वास रखने वाले कवि है । वे देश की एकता के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देने के लिए तैयार है ।

निष्कर्ष–

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि, दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों में आम आदमी की आशा, निराशा, खामोशी, पीड़ा, बेकरारी, बेकारी आदि की मार्मिक अभिव्यंजना की है । अपनी ग़ज़लों के माध्यम से दुष्यंत कुमार ने न केवल सभ्यता के निर्मम पहलुओं को उजागर किया अपितु समय के अध:पतन और बर्बरता से मुठभेड़ करने में उनकी ग़ज़लें समर्थ हैं । डॉ. गिरीश त्रिवेदी के विचार इस संदर्भ में बड़े ही सटीक जान पड़ते हैं । वे लिखते हैं– "साये में धूप' की ग़ज़लों में दुष्यंत ने व्यक्तिगत पीड़ा से लेकर समष्टिगत वेदना को स्वर दिया है । इन ग़ज़लों में दुष्यंत की आस्था का केंद्र आज का मनुष्य रहा है जो बहुत कुछ सहता है और जीवन में संघर्ष झेलता हुआ आगे बढ़ता है । दुष्यंत को काव्य के शिव तत्व की शक्ति में आस्था और श्रद्धा है । वह कवि की आवाज का प्रभाव जानता है, समझता है । यह एक ऐसी आवाज है जो दबाएँ नहीं दब सकती और अनवरत निकलती ही रहती है ।"[11]

कवि दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों का शिल्प–विधान अत्यंत विशाल है । 'साए में धूप' की ग़ज़लों में दुष्यंत कुमार ने जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह आम आदमी की बोलचाल की भाषा है । सीधे–सरल और प्रवाही शब्दों के प्रयोग से कवि ने आम आदमी की पीड़ा, घुटन, दमन एवं संघर्ष को वाणी प्रदान की है । उर्दू, हिंदी के साथ–साथ दुष्यंत ने संस्कृत के तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रसंगानुरूप प्रयोग किया है । विभिन्न प्रतीक, बिंब, अलंकार, छंद और ओजपूर्ण शब्दावली के कारण ग़ज़ल की भाषा सौष्ठव में ताजगी आ गई है । कवि दुष्यंत कुमार का गज़ल साहित्य राह से भटके समाज का पथ प्रदर्शन करने में सक्षम है ।

संदर्भ–

1. डॉ अलका निकम–वगदारे– दुष्यंत कुमार और सुरेश भट की गज़लों का सामाजिक चिंतन, पृ –30
2. दुष्यंत कुमार –साए में धूप, पृ– 13
3. वही, पृ. 13
4. वही, पृ–16
5. ग. तु. अष्टेकर– दुष्यंत कुमार रचना और रचनाकार, पृ –143
6. दुष्यंत कुमार– साए में धूप, पृ.19
7. अलका निकम–वगदारे – दुष्यंत कुमार और सुरेश भट की गज़लों का सामाजिक चिंतन, पृ– 38

8. दुष्यंत कुमार– साए में धूप, पृ. 08

9. वही, पृ. 17

10. डॉ. गिरीश त्रिवेदी – दुष्यंत कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.142

साहित्याकाश

आधुनिक तेलुगु कहानियों में आदर्श मानव मूल्य

डॉ. एस. कृष्ण बाबु

अध्यक्ष,

वाजा ए पी एवं हिन्दी साहित्य भारती, आन्ध्र प्रदेश इकाई

डोर नं 4–62–19/3 – फ्लैट नं.201,

श्री वेंकट सौशील्यम, लॉसंस बे कॉलोनी

विशाखपट्टणम– 530 017

मोबाइल : 8885990444

तेलुगु कहानी जगत में ऐसे अनेक कथाकारों का आविर्भाव हुआ जिनकी कृतियों में लोक कल्याण एवं समाज पुनर्निमाण की प्रविधि को दर्शाते हुए वर्तमान जगत के विकृत यथार्थ से मुक्ति पाने के उपाय प्रस्तावित हैं। श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री, चिंता दीक्षितुलु, श्री बुच्चिबाबु, बलिवाड कांता राव, गुडिपाटि वेंकटाचलम, मधुरांतकम राजा राम, राचकोंद विश्वनाथ शास्त्री, कोडवटिगंटि कुटुंबराव, कालीपट्नं रामाराव, द्विभाष्यम राजेश्वर राव, एल आर स्वामी, के जी वेणु, के के रघुनन्दन, श्रीमती के के भाग्यश्री, डॉ अय्यगारि सीतारत्नम् प्रोफेसर पी के जयलक्ष्मी आदि असंख्य तेलुगु कथाकरों की कहानियों में स्वतंत्र भारत के उज्वल भविष्य के लिये आवश्यक उपाय बडे ही रोचक एवं प्रभावी ढंग से प्रतिपादित किये गये। मानव कल्याण एवं समाज हित के विविध पक्षों को प्रकाश में लाने वाली इन कहानियों का प्रचलन अवश्य ही इस देश के उत्थान के लिये उपयोगी होगा।

तेलुगु के प्रसिद्ध कहानीकार श्री बुच्चिबाबु ने अपनी कथा कृतियों में अपने व्यक्तिवादी चिंतन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है। उनकी कहानियों का अध्ययन करने से हमें यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जब मनुष्य अपने व्यक्तित्व में विकसित असंख्य दुर्बलताओं का नियंत्रण करते हुए अन्य किसी व्यक्ति के विकास में हस्तक्षेप करने की चेष्टा नहीं करेगा तो वह अवश्य ही अपने समाज का सशक्त अंग बन सकेगा।

बाल–मनोविज्ञान पर आधारित डॉ के जी वेणु की "पापा मुझे ऐसा पालिए–" और श्रीमति के के भाग्यश्री कृत 'जीवन्त संगीत' नामक दो कहाँनियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं जिनमें कहानीकारों ने यह स्पष्ट किया कि सदैव अपनी नौकरी से व्यस्त रहने वाले माता पिता को चाहिये कि वे अपने बच्चों में अंतर्निहित कलात्मक प्रतिभा को बाहर कर उनका सही मार्ग दर्शन करें। परन्तु इसके विपरीत यदि वे अपने बच्चों पर पाबंदी लगाते रहें तो उनकी प्रतिभा मुरझा जाती है।

आत्मविश्वास और मानसिक धैर्य के बलबूते पर अंगवैकल्य पर भी विजय प्राप्त किया जा सकता है– इसी तथ्य पर आधारित श्रीमति के.के. भाग्यश्री कृत 'स्फूर्ति' एक उत्कृष्ट कहानी है जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि जिंदगी में हमारे इच्छानुकूल कुछ भी नहीं होता यही नियति है। यह कहानी अपनी विकलांगता से निराश न होकर मनोबल से आगे अग्रसर होने की चेष्टा करने वाली एक लड़की की कहानी है। विकलांगता के कारण अपने ही परिवार वालों के प्यार और सहानुभूति से वंचित एक निस्सहाय लड़की एक और विकलांग बुजुर्ग व्यक्ति से प्रेरणा पाकर किस प्रकार अपने जीवन को सफल बनाती है– इसी यथार्थ को प्रस्तुत कहानी में बडे ही प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है।

याल्ला राजेश की "वह अकेली नहीं" कहानी इस तथ्य को उजागर करती है कि बेटियाँ भी मतलबी हो सकती हैं। पिता के देहान्त हो जाने पर विधवा माँ के साथ विवाहित बेटियों के निर्मम व्यवहार का यथार्थ चित्रण राजेश की प्रस्तुत कहानी में देखा जा सकता है। वे बेटियाँ घरेलू वस्तुओं से लेकर गहनों तक का बंटवारा कर लेती हैं। आखिर घर को भी बेचकर अपने अपने हिस्से के पैसे ले जाना चाहती है। यहाँ तक कि पिता की पेंशन भी आपस में बांटने की सोचती है। वे बहनें माँ को अपने में से किसी के पास रखने का प्रस्ताव रखती हैं। माँ पार्वतम्मा को जब यह सब पता चलता है तब वह उनके इन विचारों का प्रतिरोध करके अकेले ही अपना जीवन यापन करने का निर्णय सुनाती है। वह कहती है कि वे बेटियाँ सारा सामान और गहनें बांट कर ले जा सकती हैं। लेकिन वह मकान बेचा नहीं जा सकता। क्योंकि उसमें उसके पति की स्मृतियाँ है। वह उन स्मृतियों और अपने पति के पेन्शन के साथ जी लेगी। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी की माँ पार्वतम्मा परिस्थितियों से निराश नहीं होती, हार नहीं मानती और पलायन नहीं करती। वह आत्म निर्भर होकर अकेले ही सही अपना जीवनयापन करने की घोषणा करती है।

सेवा निवृत्त व्यक्ति की हताश मानसिकता पर आधारित के.के. रघुनंदन की कहानी 'आगे भी है जिंदगी' समसामयिक मानव जीवन की और एक पहलू को सामने लाती है। जब तक कोई व्यक्ति सेवा कार्य में व्यस्त रहता है तब तक वह कभी अपने आप को अकर्मण्य अथवा अकेला महसूस नहीं करता। परन्तु वह

सेवा निवृत्ति के पश्चात् भीड़ में भी एकदम अकेला महसूस करने लगता है। लेकिन जब वह अपने आस पास के लोगों से यह जान लेता है कि समाज सेवा, साहित्य सेवा के द्वारा अच्छे मानव संबंध विकसित करते हुये अपने शेष जीवन को सार्थक बना सकते हैं तो उसे अपार संतुष्टि होती है।

समसामयिक समाज के प्रत्येक सदस्य की मानसिकता में अपनेपन की स्वार्थ भरी प्रवृत्ति बढती ही जा रही है। समाज के जरूरतमंदों की तुलना में यदि हम अपने परिवार के सदस्यों के आडंबरों पर अपनी संपत्ति लुटाना चाहें तो वह बहुत ही अनुपयुक्त होगा। इस सन्दर्भ में तेलुगु की लोकप्रिय कथाकार श्रीमती वलिवेटि नाग चन्द्रावती कृत 'निर्णयम्' कहानी उल्लेखनीय है। इस कहानी में पहले गॉव में रहने वाली सावित्रम्मा हैदराबाद में रहने वाले अपने बेटे बहू को घरेलू सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये बडी कंजूसी से पैसे इकट्ठा करती है। पैसे लेकर हैदराबाद जाने वाली सावित्रम्मा से मिलने उसकी नौकरानी तविटम्मा आग में जली हुई अपनी झोंपडी की मरम्मत के लिये एक हजार रूपये मांगती है, लेकिन सावित्रम्मा कुछ कहकर टाल देती है। हैदराबाद जाकर जब वह अपने बेटे बहू की ऐशो आराम भरी जिन्दगी को देखती है तो उसे तविटम्मा और उसके परिवार पर तरस अता है। तुरन्त वह गॉव लौटकर तविटम्मा को उसकी झोंपडी की मरम्मत के लिये पैसे देती है। सावित्रम्मा की यह सहानुभूति भरी चेष्टा देखकर तविटम्मा की आंखों में आंसू भर आते हैं। झट वह सावित्रमा के चरणों पर गिर पडती है। उसे सावित्रम्मा एक देवी जैसी दिखने लगती है।

इसके पश्चात् श्री मधुरांतकम राजा राम की कहानी 'भगवान की सूची' (भगवंतुडि जाबिता) का उल्लेख उपयुक्त होगा। प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने यह संदेश दिया कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को स्वावलंबी होकर आजीवन अपने परिवार, आस–पडोस, कसबा अथवा गॉव के हित के लिये यथा संभव प्रयास करते रहना चाहिये। उसके ऐसे जीवन से ईश्वर की क्या प्रतिक्रिया होगी यह नहीं कहा जा सकता, परन्तु समसामयिक युग में सारा देश ऐसे व्यक्तियों पर गर्व करेगा।

पारिवारिक क्षेत्र की महिलाओं के बीच विशेष रूप से सास बहू के मध्य बहुधा विघटित संबंध देखने को मिलते हैं। कही सास बहू को परेशान करती रहती है तो कहीं बहू सास को कोई सम्मान न देती हुई उसे कष्ट पहुंचाती रहती है। इस संदर्भ में तेलुगु के समसामयिक लोकप्रिय कथकार श्री मोलकलपल्लि कोटेश्वर राव कृत ऐसी ही एक कहानी 'अत्ता कोडलु' (सास बहू) का उल्लेख अत्यन्त उपयुक्त होगा। प्रस्तुत कहानी की नायिका कमलम्मा अपनी बहू अंजना से बहुत प्रेम करती थी। त्योहार के अवसर पर परिवार के सभी सदस्यों के लिये कपडे लेने वे दोनों एक कपडे की दुकान पर जाती हैं। कपडे खरीदते वक्त उनके मध्य हुए वार्तालाप से दूकानदार ताज्जुब में पड जाता है। अपने घुटनों में दर्द की वजह से कमलम्मा आकर जब कैश–

काउंटर के पास रखी कुर्सी पर बैठ गई तो वह कमलम्मा से पूछने लगता है। 'माँ जी! आप दोनों सास बहू हैं या माँ बेटी?' कमलम्मा का पति काफी पियक्कड था। उसकी सास और ननद उसे काफी परेशान करती थी। इसलिये उसने उसी समय तय कर लिया था कि वह अपनी बहू से बेटी जैसा प्रेम करेगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सामाजिक जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जनता की कोई ऐसी समस्या नहीं, ऐसा कोई जीवन मूल्य और आदर्श नहीं, ऐसा कोई सांस्कृतिक आयाम नहीं और ऐसा कोई राजनैतिक या आर्थिक अंश नहीं जिनका स्पर्श तेलुगु की कहानियों में नहीं किया गया हो। वर्तमन तेलुगु कहानियों की ऐसी वैविध्यपूर्ण वस्तु चेतना सहृदय पाठकों में अपना जीवन सुधारने एवं समाज का पुनर्निर्माण करने की दिशा में प्रेरित करेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

चाय का प्याला

राधा स्कूटर पर बैठी ही थी कि रमेश दौड़ता हुआ आया और बोला "राधा इतनी जल्दी जा रहीं हो?" राधा के चेहरे पर परेशानी थी क्योंकि पिछले दो वर्षों से रमेश उसके पीछे पड़ा है। वो चाहता है कि राधा उससे दोस्ती करें। दोस्ती करें मतलब उसके साथ घूमें–मज़ें करें जैसे बाक़ी करते हैं। पर राधा को ये सब पसंद नहीं है। हालाँकि वह इतनी सुंदर और कोमल है कि कॉलोनी और कॉलेज के कई लड़के चाहते हैं कि वो उनकी गर्लफ्रेंड बने। पर सही कहें तो राधा को अभी तक कोई पसंद ही नहीं था। शायद ईश्वर उसके लिए साथी बनाना ही भूल गया था। इतनी सुंदर होने के साथ–साथ वह स्कूल के दिनों से पढ़ाई में भी टॉपर रही हैं। शायद सुंदरता और बुद्धिमत्ता एकसाथ केवल राधा में ही थी। रमेश वैसे ठीक लड़का हैं। पर उसका हर बात को लेकर आग्रह राधा को बिल्कुल पसंद नहीं हैं। वह अपना नाम किसी भी लड़के के साथ जोड़ना नहीं चाहती। उसने बचपन से कई लोगों को स्वयं से जबरन चिपकता हुआ सा अनुभव किया था। राधा साहित्य की छात्रा हैं। उसने पढ़ा हैं कि भारत जैसे सुसंस्कारित देश में लगभग पचहत्तर प्रतिशत लड़कियों का लैंगिक शोषण करने का प्रयास उस लड़की के पास के रिश्तेदारों द्वारा ही किया जाता है। इसे उसने महसूस भी किया था । अत: वह किसी से दोस्ती नहीं करना चाहती। जैसे राधा ने रमेश को टालने के लिए कहा कि "पिताजी का फ़ोन आया हैं, मुझे घर बुलाया हैं, शीघ्र जाना होगा।" बिना उसकी प्रतिक्रिया जाने राधा निकल गई।

रात दस बजे के क़रीब शबाना ने राधा को फ़ोन किया। राधा से यहाँ–वहाँ की बात करते शबाना ने पूछा "राधा तुझे लड़कों के साथ इतनी नफ़रत क्यों हैं? तू क्यों कोई मित्र बनाना नहीं चाहती? अरे लड़कियाँ कितने मित्र रखती हैं पता भी हैं तुमको? चार–चार, पाँच–पाँच! बस अपनी इच्छाओं को पूरी करती हैं। फ्री में खाती–पीती, घूमती–फिरती हैं। कईं गिफ्ट पाती हैं। ड्रेस, जूते, गहने!" "मुझे इसमें कोई इंटरेस्ट नहीं हैं यार ! मेरे पापा हैं मुझे लाड़–प्यार करने और बिना किसी रिटर्न की इच्छा से मेरे लिए ढेरों गिफ्ट देने के लिए । तुम्हें नहीं पता तुम्हारी किस तरह की बेइज़्ज़ती यह लड़के तुम्हारे पीछे करते हैं । और हाँ ! आइंदा इस तरह की घटिया बात मुझसे मत कराना । वर्ना मैं तुझसे भी बात करना बंद कर दूँगी ।" राधा ने शाहीना को डाँटते हुए कहा ।

शबाना ने सँभालते हुए कहा "अरे तू ग़लत समझ रहीं हैं। मैं तो यह कह रहीं हूँ कि सिर्फ़ कॉलेज की कैंटीन में रमेश के साथ चाय पीने में क्या बुराई हैं। वो अच्छे घर का शरीफ लड़का है। आज जब तुम गई तो वह बहुत दुःखी था। दो वर्ष में एक बार भी तुमने उससे सीधे मुँह बात नहीं की। यह ठीक नहीं हैं ना? मैं चाहती हूँ तुम कल उसके साथ चाय ही पी लो।"

राधा सुलझी हुई लड़की हैं । वह कहती हैं "शाहीना जिस चाय के प्याले से जीवन में तूफ़ान उठने वाले हों , वह चाय का प्याला दूर रहें वो ही अच्छा।" शाहीना ने हताश होकर कहा "तो तू मानेगी ही नहीं। अच्छा गुड नाइट।" और फ़ोन बंद कर दिया ।

*****

संपर्क सूत्र

प्रो. पंढरीनाथ पाटील 'शिवांश'
गंगामाई महाविद्यालय, नगांव, धुले
8208588900

नक्काशी

जीवन से बहुत अधिक अपेक्षा न रखकर हमेशा अगर हम ये मानकर चलें कि जो भी होगा वो मुझसे है और सब कुछ नवीन और सहज होगा तो हमारी पूरी सोच और दृष्टिकोण रूपांतरित हो जाते हैं। जीवन को अपने हाथ में रखकर यदि आप सोचते हैं कि आप चमत्कारिक रूप से सब अपने हिसाब से कर लेंगे तो आपके हाथ केवल निराशा आएगी। जिंदगी को बिना किसी पूर्वाग्रह के स्वीकार करें, वरना गांभीर्य और बोझिलता बहुत बढ़ जाएगी और ये घाटे का सौदा है।"

अपनी डायरी में ये सब लिख कर मिस अनामिका उठीं और खिड़की पर आ गईं। मैक्लोडगंज अभी जाग रहा था। दूर धौलाधार की चोटियां आकाश को गहराई तक भेद रहीं थीं। उगता हुआ सूरज अपनी उच्चतम प्रकाष्ठा में, अपनी नरम किरणें पहाड़ों पर बिखेर रहा था। ठंडी और स्फूर्तिदायक हवा एकदम साफ थी। सड़कों पर लामा मठों की तरफ आ जा रहे थे। ये वही लोग थे जो बर्बर और असभ्य चीनीयों से बचते हुए इस क्षेत्र में आकर बस गए थे लेकिन ऐसा नहीं है कि ये सब भागकर आए थे, बल्कि इनके प्रशिक्षण और आस्थाएं ऐसी थी कि यदि जरूरत पड़े तो ये बर्बर यातनाएं भी सह सकते थे, पर कभी कभी पवित्र वस्तुएं, अभिलेख, गोपनीय लेखन और परंपरा को बचाने के लिए भागकर आने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। उनको ध्यान से देखती हुई मिस अनामिका अपने जीवन की घटनाओं को याद कर रहीं थीं। आखिर वो भी तो सब छोड़ कर.....

सुबह के आठ बज चुके थे। वो दिन की शुरुआत चाय से करती हैं। उनको नॉर्लिंग रेस्तरां की चाय ही पसंद है, इसलिए वो अपने होम स्टे से निकलकर दस कदम दूर बने इस छोटे से रेस्तरां में आ गईं। मिस अनामिका को देखकर वहाँ के स्टाफ ने 'ताशी डेलेक' बोलकर उनका अभिवादन किया और चाय बनवाने चला गया। आज कल मिस अनामिका बहुत से प्रयोग कर रहीं थीं। परंपरागत भारतीय चाय को छोड़कर वह मक्खन वाली नमकीन तिब्बती चाय पीती हैं। अपने जीवन के साथ भी उन्होंने ऐसा ही कुछ प्रयोग किया है। वो पचपन साल की महिला हैं और तलाकशुदा हैं। अद्वितीय तेज और शीतलता की मूर्ति, जैसे सूरज और चंद्रमा एक हो गए हों। पाँच साल पहले उन्होंने तलाक ले लिया था, जबकि घर परिवार और रिश्तेदार यह बात हजम नहीं कर पा रहे थे कि जब उस घर में सारी ज़िंदगी गुज़ार दी तो अब इस उम्र में तलाक लेने का क्या औचित्य था?

लेकिन मिस अनामिका एक प्रेम और सम्मान रहित रिश्ते को ढोती रहीं थीं। उस हद से ज्यादा अमीर व्यक्ति को, जिसे समाज उनका पति कहता था, उसे मिस अनामिका की मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक जरूरतों का अहसास तक नहीं था और स्वभाव में क्रूरता और गुस्सा अलग से था। अपने बेटे को पढ़ा लिखा कर मिस अनामिका ने बड़ा किया और जब वो विदेश चला गया तो मिस अनामिका ने खुद को उस सोने के पिंजरे से आजादी दिलाई, जिसमें उनका साथ सिर्फ उनके बेटे ने दिया था। तब से मिस अनामिका 'सोलो ट्रैवलर' बनकर अकेली भारत दर्शन कर रहीं हैं और पिछले कुछ महीनों से यहाँ मैकलोडगंज में "कुंगा होम स्टे" में रुकी हुई हैं। एक नया शौक उनमें जागा है और वो है फोटोग्राफी का। उनके बेटे ने अमरीका से ही निकोन का कैमरा भेजा है, जिसे मिस अनामिका खूब इस्तेमाल करती हैं। इतनी देर में चाय आ गई और मिस अनामिका भी अपने ख्यालों की दुनिया से बाहर आ गईं। उनके पास वाली कुर्सी पर प्रोफेसर गुप्ता बैठे उनकी तरफ देखकर मुस्कुरा रहे थे। मिस अनामिका कुछ झिझक गईं क्योंकि उनको नहीं पता चला कि प्रोफेसर गुप्ता कब से उनके पास बैठे थे।

प्रोफेसर गुप्ता दिल्ली यूनिवर्सिटी से रिटायर्ड हैं। उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी, सब बच्चे शादीशुदा थे। अब जीवन के इस पड़ाव पर अपने अन्य दोस्तों की तरह उन्होंने घर में बैठने की अपेक्षा 'यायावरी' को चुना। वो पिछले कुछ महीनों से यहाँ मैक्लोडगंज में एक किराए के घर में रह रहे हैं। दोनों रोज इस वक्त चाय पीते हैं। इनकी मुलाकात इसी नॉर्लिंग रेस्त्रां में हुई थी।

प्रोफेसर गुप्ता अनामिका जी को "बंडल ऑफ कोनट्राडिक्शन" कहते थे। उनके हिसाब से मृदु स्वभाव वाली मिस अनामिका के अंदर एक विद्रोही स्त्री भी रहती है।

प्रोफेसर गुप्ता ने मिस अनामिका के मौन को देखते हुए चुप रहना ही बेहतर समझा और चुपचाप कॉफी पीने लगे।

फिर मनचाहा विश्राम लेकर मिस अनामिका ने उनकी और देखा।

"आपकी नक्काशी सीखने की क्लास कैसे चल रही है?" वो बोलीं।

"अच्छी चल रही है, ये एक ऐसा विषय है जिसमें जिसे मैं पसंद करता हूँ। तिब्बती लोगों में खास बात ये है कि लकड़ी को व्यर्थ बर्बाद नहीं करते। धारदार चाकू से लकड़ी काटकर सुंदर कलाकृति बनाना, कितना चमत्कारी है न!"

"जीवन भी तो ऐसा ही है प्रोफेसर गुप्ता। एक ऑब्जेक्ट पर दृश्य तत्वों की नियुक्ति... और एक अप्रत्यक्ष वस्तु को खोजने के लिए उपक्रम करना..." मिस अनामिका कुछ गंभीर होकर बोलीं।

"जीवन का इस तरह अन्वेषण करना एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक की यात्रा है अनामिका। बाकी सब कुछ निरर्थक ही नहीं बल्कि खंडित भी है। वास्तव में, जीवन जिया कैसे जाता है बेहतर दशाएं क्या हो सकती हैं, ये सब हमारे समाज ने हमें कभी सिखाया ही नहीं है। नक्काशी करना और जीवन को जीना एक बराबर है। बस दोनों को पूरी मर्यादा और गरिमा के साथ किया जाए तो अच्छा पैटर्न बनकर सामने आता है।

मिस अनामिका को प्रोफेसर गुप्ता ज्यादा ही प्रबुद्ध और विनम्र लगते थे। छह फुट से भी लंबे प्रोफेसर गुप्ता पर्वत सामान अडिग गहन रूप से शांत और सहज प्रकृति के व्यक्ति थे। उनके स्वभाव में एक नरमी थी जो मिस अनामिका को अपनी शादीशुदा जिंदगी में कभी नहीं मिली थी।

"और आज का "थॉट ऑफ द डे" क्या है?" मिस अनामिका ने बात बदलते हुए मज़ाकिया लहज़े में पूछा।

"आज लामा सोग्याल नक्काशी सिखाते हुए बता रहे थे कि एक महत्वपूर्ण सूत्र ये भी है कि अपने पूरे अस्तित्व के साथ संपूर्णता पाने का प्रयत्न करें, मतलब जीवन की अनंत एवं स्वाभाविक भव्यता के बीच जीने के प्रयत्न करना।"

"हाँ, क्योंकि सब कुछ अस्थाई है प्रोफेसर गुप्ता।" अनामिका बोलीं।

बाहर सैलानियों की चहलकदमी बढ़ गई थी। कुछ विदेशी पर्यटक नॉर्लिंग में इकट्ठा होना शुरु हो गए थे। इस वक्त रेस्त्रां में जो इजरायली संगीत बज रहा था उसकी धुन मिस अनामिका को विशेष प्रिय थी। जब हम फुर्सत में होते हैं तो संगीत अपनी उपस्थिति बहुत अलौकिक तरीके से दर्ज करवाता है।

दोनों संगीत सुनते रहे और कुछ देर बाद आपस में विदा ली।

प्रोफेसर गुप्ता मिस अनामिका की आँखो की तरलता देखते रहते थे और मन में सोचते रहते थे कि अनामिका जी जैसे सरल लोग बाहर से भी और भीतर से भी इतने सुन्दर क्यों होते हैं। मिस अनामिका इतनी अद्भुत थीं कि पिछले दो महीनों से हर पल उनको उन्हीं का ख्याल बना रहता था। अब तो नॉर्लिंग में सुबह की कॉफी पीने के लिए आना और अनामिका जी से बातें करना, जीवन का एक जरूरी हिस्सा बन रहा था।

मिस अनामिका एक घंटे की ध्यान की क्लास के लिए वहाँ से दो किलोमीटर दूर धर्मकोट के तुषिता सेंटर जाती थीं। आज भी वो उस तरफ सड़क पर पैदल चलती जा रहीं थीं। ये इलाका भारत का हिस्सा तो बिल्कुल भी नहीं लगता था और यही बात इसको विशिष्ट बनाती थी। बीच–बीच में मठों से घंटों की आवाज और हवाओं में लाल चंदन की धूप की खुशबू दिव्यता का अहसास करवाती।

कुछ तिब्बती महिलाएं वहाँ से गुजर रहीं थीं, जो अब मिस अनामिका को पहचानने लग गईं थीं। सब उनको 'ताशी डेलेक' बोल कर अभिवादन करती हुईं आगे गुजर रहीं थीं। तिब्बती महिलाएं भड़कीले लाल, नीले, पीले वस्त्र पहनती हैं, लाला मूंगा और हरे फिरोजा पत्थर की मालाओं के साथ, जो मिस अनामिका को बहुत पसंद थे।

अब, मिस अनामिका तुषिता सेंटर के सामने थीं। बांसुरी, तुरही, घड़ियाल की आवाज आ रही थी इसका मतलब कि सुबह का ध्यान सत्र शुरू होने वाला था। आकाश नीला, विस्तृत और सुंदर दिख रहा था। बादल के छोटे–छोटे टुकड़े तैर रहे थे जैसे किसी पेंटर ने एक बड़े कैनवास पर सफेद रंग का ब्रश फेर दिया हो। अंदर धातु के अगरदान रखे हुए थे, जिनसे तेज खुशबूदार धुआँ ऊपर की ओर उठ रहा था। कुछ लोग प्रार्थना चक्र घुमा रहे थे, इस चक्र का प्रत्येक चक्कर एक हजार बार प्रार्थना को स्वर्ग की तरफ प्रेषित करता था। मिस अनामिका ने भी चक्र घुमाया और अंदर चलीं गईं।

अगले दिन प्रोफेसर गुप्ता नॉर्लिंग नहीं आए, न ही उन्होंने फोन किया। मिस अनामिका उनका इंतजार करती रहीं और फिर सुबह के सत्र के लिए तुषिता की तरफ चली गईं। वापस आते वक्त वो प्रोफेसर गुप्ता को फोन मिलाने का सोचने लगीं लेकिन बाद में फोन वापस बैग में डालकर उनके घर की तरफ मुड़ गईं। मिस अनामिका को फोन का उपयोग असहज कर देता था, कारण उनको भी नहीं पता था। फोन उन्होंने सिर्फ अपने बेटे से बात करने के लिए ही रखा था।

अंत में वो प्रोफेसर गुप्ता के घर के सामने खड़ी थीं। दरवाजा उनके तिब्बती सहायक जामयांग ने खोला और मिस अनामिका सीधे प्रोफेसर गुप्ता के कमरे की तरफ चली गईं। कमरे के अंदर चीजें व्यवस्थित थीं। फर्श और दीवारों पर लकड़ी का काम था और अनेक मक्खन के दिए चल रहे थे। सब कुछ साफ, सुंदर और रोशन।

प्रोफेसर गुप्ता कोई किताब पढ़ रहे थे और वो भी इतने ध्यान से की उनको मिस अनामिका के वहाँ होने तक का एहसास नहीं हुआ। वहाँ तरह तरह की किताबें थीं, दि सर्मन ऑन दि माउंट, राबिया–बसरी के गीत, मैडम ब्लावट्स्की की सेवन पोर्टलस आफ़ समाधि इत्यादि। दूसरी तरफ टेबल पर नक्काशी का समान छेनी, गोज और कुछ अलग अलग आकार के लकड़ी के टुकड़े पड़े थे। बहुत ही कलात्मक और बौद्धिक शौक थे प्रोफेसर गुप्ता के।

"प्रोफेसर गुप्ता" मिस अनामिका जी धीमे से बोलीं।

प्रोफेसर गुप्ता एकदम से चौंक गए। उनको विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मिस अनामिका उनके कमरे में उनके सामने खड़ी थीं।

मिस अनामिका को सही से पता था कि प्रोफेसर गुप्ता उनको किस रूप में देखते हैं, लेकिन फिर भी प्रोफेसर गुप्ता के सानिध्य में जो नरमी और आत्मीयता उनको मिलती थी वो बहुत अमूल्य और अनोखी थी। चट्टान जैसे मजबूत लेकिन जल की तरह तरल प्रोफेसर गुप्ता के मन में कई बार मिस अनामिका का हाथ पकड़ कर बैठने की इच्छा उठती थी, लेकिन उन्होंने कभी कोशिश ही नहीं की, वैसे भी प्रेम कोई निश्चित प्रयास नहीं है, इसमें सहज भाव से डूबना होता है, समाहित होना होता है।

"आप आज आए नहीं, मैं इंतजार कर रही थी...."

"ओह... मेरा इंतजार.... दरअसल मैं आज नक्काशी की क्लास भी नहीं गया। कोई खास वजह नहीं है, बस मन ही नहीं था।"

"क्या पढ़ रहे थे आप?"

"आजकल विश्व साहित्य पढ़ रहा हूँ। सुबह से निज़ार कब्बानी की कविताओं में डूबा हुआ था।"

"अच्छा.... लेकिन मैंने कभी उनके बारे में नहीं सुना... आप उनकी कोई पंक्ति सुनाइए... जो आपको सबसे ज्यादा पसंद हो।"

"हाँ, जरूर अनामिका।"

इतनी देर में जामयांग चाय लेकर आ गया और वो दोनों वहीं डाइनिंग टेबल पर बैठ गए। प्रोफेसर गुप्ता ने एक घूंट चाय का पीया और कविता कहनी शुरू की...

"मैं कोई शिक्षक नहीं हूँ, जो तुम्हें सिखा सकूं कि कैसे किया जाता है प्रेम। मछलियों को नहीं होती शिक्षक की जरुरत, जो उन्हें सिखाता हो तैरने की तरकीब और पक्षियों को भी नहीं, जिससे कि वे सीख सकें उड़ान के गुर.... तैरो ख़ुद अपनी तरह से, उड़ो–ख़ुद अपनी तरह से, प्रेम की कोई पाठ्य–पुस्तक नहीं होती....."

अनामिका जी कहीं खो गईं थीं और प्रोफेसर गुप्ता एकदम चुप हो गए।

"बहुत ही सुन्दर है। कविताओं के सम्मोहन उनके काम आते हैं जिनको उनकी जरूरत है। लेकिन ज्यादा तर लोग तो अंधी दौड़ में शामिल हैं .." अनामिका जी कुछ सोचते हुए बोलीं।

"जरूरत से ज्यादा बौद्धिकता और आधुनिकता ने हमारे स्वाभाविक मृदु भाव छीन लिए हैं, अनामिका।"

"जी, समाज हर बात को "इंटेलेक्चुअल लैंस" से ही देखता है और भाव जगत को देखने समझने की कोशिश कोई नहीं करता।"

प्रोफेसर गुप्ता मिस अनामिका को ध्यान से देख रहे थे और उनकी आँखों में जो गूढ़ सांकेतिक भाषा थी, मिस अनामिका समझ पा रही थीं।

"भाव जगत एक विस्तृत विषय है... एक आदिम अवस्था... सामाजिक तो बिल्कुल भी नहीं..." प्रोफेसर गुप्ता चाय पीते हुए बोले।

"और, शब्द केवल संकेत दे सकते हैं.. प्रेम जैसे विस्तृत विषय को केवल जिया जा सकता है, जाना नहीं जा सकता।" मिस अनामिका बोलीं।

प्रोफेसर गुप्ता जैसे किसी नए लोक में थे... यथार्थ और स्वप्न के पार की कोई दुनिया... दोनों एक दूसरे को देख रहे थे और जामयांग उन दोनों को। वो खाने में त्सम्पा बनाकर लाया था।

प्रोफेसर गुप्ता कुछ सहज हुए और मज़ाक में बोले कि तिब्बती लोग जीवन के पहले खाने से अंतिम खाने तक त्सम्पा और चाय पर ही निर्भर रहते हैं। उसके बाद दोनों घंटों बैठे बातें करते रहे और मिस अनामिका वापस होम स्टे आ गईं।

प्रोफेसर गुप्ता को लेकर मिस अनामिका के विचार उदार थे और वो ये भी जानती थी कि प्रोफेसर का उनके प्रति आकर्षण स्वाभाविक और विशुद्ध है। प्रेम सामाजिक नहीं अस्तित्वगत है... इतना व्यापक कि हर रूप में बांटा जा सकता है। जीवन और प्रेम भी कभी तार्किक हुए हैं भला?

उन दोनों का ऐसे ही मिलना चलता रहा और हिमपात के दिन आ गए। पूरी धौलाधार हिमपात के दिनों में बर्फ की चमकती पोशाक पहन लेती थी। जीवन में पहली बार रुई जैसी नर्म ताजा बर्फ के फूल आसमान से झरते हुए अनामिका जी देख रहीं थीं और खुद को अकल्पनीय दुनिया में पा रहीं थीं। उस दिन मिस अनामिका कुदरत के इस तिलस्म को देखने दूर तक चली गईं और धर्मकोट के ऊपरी शिखर पर जाकर अचंभित हो गईं। बर्फबारी रूकी हुई थी और बहती हुई ठंडी हवा के शोर में एक नई आवाज भी सुनाई दे रही थी, मठों से संगीत की आवाज... प्रार्थना ध्वज जोर–जोर से लहरा रहे थे। दूर की पहाड़ियों के भ्रुवों पर जो दरारें थीं, उनमें बर्फ ऐसे भर गई थी जैसे घाव भरते हैं।

मिस अनामिका ने खूब तस्वीरें लीं और प्रोफेसर गुप्ता के घर की तरफ चल पड़ी। प्रोफेसर गुप्ता स्वास्थ्य कारणों से बर्फबारी के कारण बाहर नहीं आ रहे थे। पिछले तीन–चार दिनों से वो घर में ही थे। उनके पास जाते ही अनामिका पहाड़ों और बर्फ की सुंदरता का बखान करने लगीं और गर्मजोशी से प्रोफेसर

गुप्ता को तस्वीरें दिखाने लगी। वो पचपन साल की महिला नहीं बिल्कुल बच्चे जैसी लग रहीं थीं और प्रोफेसर गुप्ता उनको अनवरत देखते, सुनते जा रहे थे, जबकि खोए वह अपने ख्यालों में थे।

प्रेम में दूसरा ही सब कुछ हो जाता है, खुद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण। "मैं" का विसर्जन हो जाता है बचता है सिर्फ "होना", प्रोफेसर गुप्ता यह महसूस कर पा रहे थे। उनकी आँखें अप्रत्याशित कारणों से नम हों उठीं और उन्होंने मिस अनामिका के कंधे पर हाथ रख दिया। ये पहली बार हुआ था। इस छुअन से मिस अनामिका अपनी तिलिस्मी दुनिया से बाहर यथार्थ में आ गईं और उनकी सिसकी निकल गई। ये वो आत्मीय स्पर्श था, जो उन्हें आजीवन नहीं मिला था। वह दोनों देर तक चुपचाप बैठे रहे। मिस अनामिका जान चुकी थीं कि जीने के लिए नियम या सामाजिक बंधन नहीं बल्कि अनाम प्रेम चाहिए।

प्रोफेसर गुप्ता के हाथ उनके सिर और कंधे को सहलाते रहे और मिस अनामिका देर तक रोती रहीं। तीस साल की चट्टान जैसी कठोर शादीशुदा जिंदगी की दुःखद, निरर्थक और भयावह यादें आज स्वयं को प्रत्यक्ष रूप से उद्घाटित कर रहीं थीं।

"यदि मेरे साथ चलने पर तुम्हारी जिंदगी में कोई खुशी आ सकती है तो मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ अनामिका। हम अगला आने वाला जीवन एक साथ...."

मिस अनामिका कुछ संभली और उन्होंने अपने आँसू पोंछे।

वो मुस्कुराते हुए बोलीं,"प्रोफेसर गुप्ता, मैं सारा जीवन खंडित वार्तालाप करती आई हूँ लेकिन अब इतने सालों बाद मुझे मेरे अंदर के स्वर स्पष्ट भाषा में निर्देश दे रहें हैं कि अब मुझे किसी भी तरह के बंधन की नहीं बल्कि स्वतंत्रता की जरूरत है। मैं आपके प्यार के साथ मुक्त हो कर जीना चाहती हूँ.... जैसे एक दिन आपने कविता में बोला था कि तैरो खुद अपनी तरह से, उडो खुद अपनी तरह से...."

प्रोफेसर गुप्ता चुप रहे। उनको ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उन दोनों के मध्य असंख्य धवल वर्तुल प्रकट हो रहे थे और दोनों के हृदयों का संयोग करवा रहे थे। बहुत गरिमा के साथ उन्होंने मिस अनामिका की बात को मुस्कुराते हुए मौन समर्थन दिया। जीवन की वास्तविकता एक हद पर जाकर हमसे शब्द छीन लेती है। विशुद्ध प्रेम के उज्ज्वल प्रकाश में निराशा का एक कतरा भी नहीं रहता और एक गहरी समझ का उदय होता है।

उस दिन मिस अनामिका ने अपनी अगली ट्रैवल डेस्टिनेशन के बारे में भी बात की। हिमाचल के पहाड़ों पर लंबा समय गुजार देने के बाद अब वो जंगलों की तरफ जाना चाहती थीं और अंततः एक महीने बाद वह चलीं भी गईं।

इस बात को एक साल बीत चुका था और मिस अनामिका इन दिनों सुंदरवन के जंगलों में फोटोग्राफी कर रहीं थीं। प्रोफेसर गुप्ता और वो लगातार फोन और चिट्ठियों के माध्यम से संपर्क में बने रहते थे और एक बार दोनों की मुलाकात जिम कार्बेट में हुई थी, जब मिस अनामिका ने प्रोफेसर गुप्ता को जंगल सफारी के लिए बुलाया था। पत्रों में वो प्रोफेसर गुप्ता को अपने नए–नए अनुभव बतातीं और प्रोफेसर गुप्ता उनको 'थॉट ऑफ द डे'।

आज प्रोफेसर गुप्ता अपनी किताबों में डूबे हुए थे कि जामयांग उनके पास एक कोरियर लेकर आया। प्रोफेसर गुप्ता खुशी से उछल पड़े, ये मिस अनामिका ने भेजा था। जल्दी–जल्दी उन्होंने खोला तो उसमें प्रोफेसर गुप्ता की जिम कार्बेट वाली एक फ्रेमड़ तस्वीर निकली, जो प्रोफसर गुप्ता को भी याद नहीं था कि मिस अनामिका ने कब खींची थी और साथ में एक पत्र और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की तरफ से एक एंट्रीपास था। बिना वक्त गंवाए प्रोफेसर गुप्ता ने चिट्ठी पढ़नी शुरू कि तो पता चला कि इस साल का 'एमेच्योर फ़ोटोग्राफ़र ऑफ़ द ईयर' का पुरस्कार मिस अनामिका को मिलने जा रहा था और मिस अनामिका ने उनको उस कार्यक्रम के लिए अगले हफ्ते दिल्ली बुलाया था।

प्रोफेसर गुप्ता की आँखों में चमक आ गई। वो सोचने लगे कि अनामिका ने स्वतंत्र जीवन की अमर और अंतहीन प्रकृति को पा लिया था। सालों की गहन विनयशीलता, कष्ट, सादगी और संयम मनुष्य की मनोवृत्ति की नक्काशी करके कैसे बदल देते हैं, मिस अनामिका को देखकर समझ आ रहा था।

उपनिषदों में इसको ही चेतना का रूपांतरण कहा गया है।

*****

संपर्क सूत्र

अनुजीत

फोन नम्बर – 9919906100

पता – 4, राम रहीम स्टेट,

मलाक रेलवे क्रॉसिंग के पास, नीलमथा,

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

226002

फ्रेनेमी

पीछे का गेट खुलने की आवाज़ को सुनकर रेखा चौंक गयी और मन ही मन बोली आ गयी बरखा! जिंदा आफत अब ये दिमाग खायेगी और तभी घर में ऊंचा स्वर गूंजा रेखा.. ओ.. रेखा! यह स्वर गूंजता देख रेखा ने कहा, ''अरे! यार बरखा तेरा जन्मदिन बहुत जल्दी आ जाता है। जन्मदिन की पार्टी में बुलाने आयी होगी। देख मेरे एग्जाम है, मैं नहीं आने वाली। यह सुनकर बरखा बोली बस यूंहि मिलने आयी हूं। यार कोई जन्मदिन नहीं है। रेखा ने कहा, ''चल बता अब क्या लूटने आयी है लुटेरी कहीं की?'' यह सुनकर हंसते हुए बरखा ने अपनी बचपन की दोस्त रेखा को अपने गले से लगा लिया । तभी रेखा ने उसका हाथ झिड़कते हुए कहा, ''अरे! बेवकूफ़ क्या तुम्हें यह भी नहीं पता कि कोरोना अब भी चल रहा है और वैक्सीन भी अभी हम दोनों तक नहीं पहुंची। तभी बरखा ने कहा, ''मरना ही है तो लिपट कर तेरे हाथ का पुलाव खाकर न मरेंगे।'' तभी अचानक बरखा ने कहा, ''यार! रेखा तेरा ब्यायफ्रेंड गुस्सा था क्या मान गया? मैं कुछ मदद करूं? रेखा ने कहा, ''तेरे मंगेतर सुधीर के क्या हाल हैं? तो बरखा ने कहा, '' छोड़ यार वह अपनी मां बहन से पूछ कर ही हर काम करता है एक नम्बर का फट्टू।'' तू बता? रेखा ने कहा बरखा, ''मैं सिर्फ़ तुझ पर विश्वास करतीं हूँ, यह ले मेरे ब्यायफ्रेंड मनीष का नम्बर और मेरा झगड़ा मिटवा दे यार।'' तभी डोरबेल बजी तो रेखा ने कहा, ''शायद मम्मी स्कूल से आ गयीं तू पीछे गेट से निकल जा वरना डांटेगी। कहेगीं कि यही एग्जाम की तैयारी चल रही या पार्टी चल रही। यह सुनकर बरखा सोफे पर कुछ रखकर वहां से चली गयी। रेखा अपनी मम्मी को चाय बनाने किचन में गयी तो रेखा कि मम्मी ने देखा सोफे पर क्या है? उन्होंने पॉलीथिन में बियर की बोतल देखी। वह गुस्से से बोलीं क्या वो बरखा यहां आयी थी? यह सुनकर डरते हुए रेखा ने कहा, हाँ पर जल्दी भगा दिया मैनें। तो रेखा क् मम्मी ने समझाया कि यही बोतल तुम्हारे पापा ने देख ली होती तब? बेटा बुरी लड़की है दूर रहो उससे। रेखा ने कहा, ''हां, माँ आप खाना खा लो। प्लीज़ घूरो मत मैं बिल्कुल बरखा को व्हाट्सएप से ब्लॉक कर दूंगी। मां मे गुस्से से कहा कि दिमाग में ब्लॉक करो। कुछ समय बाद रात हो गयी और रेखा अपनी रजाई में दुबके–दुबके मोबाइल चलाने लगी तभी बरखा का मैसेज आया कि तू देहाती ही रहेगी बेवकूफ़। बोतल रखी है जरा सी पीकर देख तब मजा आयेगा। जिंदगी वही जो मन भर न जियो। कुशन के नीचे सिगरेट भी रखी है देख। पी मेरी जान फिर बताना। वीडियो चैट पर आ मैं सिखातीं हूं सिगरेट पीना। तुझे मार्डन स्टाइलिश बना दूंगी कि तेरा ब्यायफ्रेंड केवल तुझे ही चाहे।

यह सुनते ही रेखा ने पूरी बोतल बीयर गटक ली और चार सिगरेट भी पी डालीं और फिर दिमाग ऐसा चकराया कि सुबह एग्जाम की तैयारी के वो लायक ही नहीं रही। दूसरे दिन उसका पेपर पूरी तरह बिगड़ गया। तभी दूर से मनीष आता दिखा और वह मनीष की तरफ़ दोड़ी की लड़खड़ा कर गिर पड़ी। तभी वहां बरखा आ गयी और बोली, ''चलो डॉक्टर के पास चलो।'' रेखा ने कहा नहीं हल्का सा चक्कर आया कोई बड़ी बात नहीं है। फिर भी वह नहीं मानी और मनीष, बरखा और रेखा तीनों डॉक्टर के पास पहुंचे को डॉक्टर ने देखते ही कहा कि नशा कम किया करो। यह सुनकर मनीष गुस्से से उबल पड़ा कि रेखा तुम नशा करती हो? आर यू सीरियस? पहले पता होता मैं तुमसे बात तक नहीं करता। कहकर वहां से चला गया। यह देख बरखा ने कहा, ''मैं सब ठीक करवा दूंगी।'' तुम घर पहुंचो या सुनो तुम मेरी स्कूटी पर बैठो मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ दूं। कहकर रेखा को बरखा ने अपनी स्कूटी पर बैठा लिया और धीरे–धीरे घुमा घुमा कर समय वो कर लिया जब रेखा की मम्मी के स्कूल से लौटने का वक्त होता था तभी बरखा ने देखा कि आंटी जी यहीं से स्कूटी से निकलेगीं तो उसने तुरंत रेखा को सामने महिला डॉक्टर के अस्पताल में ले जाकर कहा, ''इसने कल सिगरेट, बियर पी है कोई दवा दे दो, इसे चक्कर आने बंद हो जायें। वह महिला डॉक्टर बोली कहीं गर्भ तो नहीं ठहर गया। चलो मैं जांच कर दूं। रेखा बोली, ''दिमाग ठीक है तुम्हारा।'' इस बहस को करते हुये रेखा बरखा दोनों उस अस्पताल से बाहर निकलीं कि रेखा कि मम्मी ने देखा कि यह मोहल्ले में क्या हो रहा है? रेखा की मम्मी ने सामने से आकर उस महिला डॉक्टर से कहा, ''क्या बात है सुलेखा जी? तो डाक्टर बोलीं कि तुम्हारी रेखा को चक्कर आ रहे उसकी हालत देखो? मैने पूछा एवोसन कराने तो नहीं आयी? यहां लड़कियां इसी कार्य से आती हैं तो मैनें पूछ लिया। इतना सुनते ही रेखा की मां ने सबके सामने रेखा को दो थप्पड़ जड़ दिये और कहा कि तमीज से कह देती कि मैम ऐसी बात नहीं है दवा लेने आयी हूं बस। लड़ क्यों रही थी। यह सब देख बरखा वहां से रफूचक्कर हो गयी। दूसरे दिन बरखा रेखा के ब्यायफ्रैंड के पास साड़ी में पहुंची और बोली मनीष मुझे मंदिर जाना है प्लीज़ तुम छोड़ दो मेरी स्कूटी गड़बड़ है। मनीष ने कहा, पीछे बैठो। तो बरखा मनीष के चिपक कर बैठ गयी और कान में बोली, ''तुम तो इतने हैंडसम हो और हैंडसम लड़के गुस्से में अच्छे नहीं लगते?'' यह सुनकर मनीष गुस्से से बोला, ''अरे! यार मैं लड़का होकर इलायची तक नहीं खाता और वो बियर सिगरेट, पता नहीं किसकी संगत में पड़ गयी रेखा।, मेरा दिल कर रहा ये जो सामने से ट्रक आ रहा है, मैं इसी के नीचे आकर अपनी जान दे दूं। यह सुनकर पीछे बैठी बरखा ने दोनों हाथ से मनीष को कस लिया और कान मैं बोली कि मर जाना किसी के काम मत आ जाना। यह सुनकर मनीष ने गाड़ी साईड में लगायी और कहा, ''दोबारा बोलना।'' तो बरखा ने आंख

मारते हुए कहा, '' मर जाना पर किसी के काम मत आ जाना।'' यह ईशारा पाकर मनीष ने कहा, ''तुम्हारे ईरादे नेक नहीं लगते।'' बरखा ने कहा, ''नेक काम करके कौन सा स्वर्ग जाना है मुझे, मुझे तो साला नरक ही जाना है। यह सुनकर मनीष ने कहा, ''क्यों क्यों? नरक में क्यों जाना? बरखा ने कहा, ''सब कमीने दोस्त नरक में ही तो मिलेगें, सब फालतू नरक में ही तो मिलेगें, भीड़ की रौनक तो नरक में ही होगी। स्वर्ग में दो चार लोग क्या मजीरे बजायेगें। यह सुनकर मनीष जोर से हस पड़ा और बोला, ''तुम्हारी बातें मस्तीभरी हैं।'' तुम अपना मोबाइल नम्बर दे दो ।कभी बेचेन हुआ तो तुम हँसा तो दोगी मुझे।यह सुनकर बरखा ने कहा, ''चलो, न कॉफी पीने चलते हैं। फिर दोनों कॉफ़ी पीने चले गये।'' बरखा और मनीष रोज हँसी मजाक करते हुए कब करीब हो गये यह मनीष भी नहीं समझ सका और एक दिन बरखा ने मनीष को बात करते सुना कि गोआ से मनीष के मम्मी पापा सुबह पांच बजे आ रहे हैं। यह बात चोरी से सुनकर बरखा ने प्लॉन बनाया। तभी मनीष का कॉल आया कि बरखा दो दिन तुम मेरे रूम पर मत आना मेरे मॉम डैड आने वाले हैं वह गलत समझ लेगें। मैं रेखा से मिलवाना चाहता हूं उनको तुम रेखा को ले आ सकती हो। हम दोनों तो अच्छे दोस्त है ना। यह सुनकर बरखा ने कहा हां बिल्कुल। अब बरखा ने सोचा कि रेखा को टॉपर स्टूडेंट हैं, बेहद खूबसूरत है, वह करोड़पति घर की बहू बन जायेगी और मैं...! मैं इस इकलौते करोड़पति लड़के मनीष और बेशुमार दौलत को नहीं छोड़ सकती। कुछ करना पड़ेगा। वह डायरेक्ट ब्यूटीपार्लर में पहुंचती है और खूबसूरत साड़ी और मेकअप वगैरह सब करके। रेखा को फोन करती है कि रेखा वह मनीष बहुत ही बुरा लड़का है और आज उसकी मंगनी है। तुम उसे भूल जाओ। यह सुनकर रेखा कहती है कि तुम झूठ बोल रही हो। तो बरखा कहती है कि तुम इस पते पर इस रूम नम्बर पर पहुंचो और खुद सारा सच देखो। इधर बरखा मनीष से कहती है कि अगर तुम्हें रेखा का सच जानना है तो इस पते पर इस रूम नम्बर पर इतने बजे पहुंचो। रेखा प्रेम से और गुस्से से भरी थी वह उस पते पर पहुंची और उस रूम को जैसे ही खटखटाया कि मुंह पर मास्क लगाये एक लड़के ने रेखा को अपनी तरफ खींच लिया और उसे कुछ नशीला पदार्थ सुंघा दिया तभी अचानक मनीष ने वह दरबाजा खोला तो रेखा उस लड़के के साथ.... वह बोला, ''धंधेवाली है साहब, पांच हजार में। तुम पैसा दो तो तुम्हारे लिये छोड़ दूं। मनीष चुपचाप बाहर निकल आया और गुस्से से बाईक चलाते हुए एक दूसरे लड़के की गाड़ी से बरखा ने उस मनीष का एक्सीडेंट करवा दिया और उसे पैसे देकर वहां से भगा दिया। फिर मनीष को ले जाकर अस्पताल पहुंची और मनीष को अपना खून देने लगी। यह सब मनीष के माता–पिता ने भी आकर देखा कि बरखा मनीष के लिए कितना कुछ कर रही है। फिर जैसे ही अगले दिन मनीष को होश आया तो मनीष के माता–पिता ने कहा कि मुझे तो मेरी बहू

मिल गयी। तुम मना मत करना मनीष। इधर बरखा सोच रही थी कि अरे! बुड्ढों तुम दोनों को सालभर में स्लो पोइजन देकर कब ऊपर पहुंचा दूंगी तुम दोनों को पता ही नहीं चलेगा और पूरी प्रोपट्री की मालकिन मैं। यही सोच ही रही थी कि मनीष की मां ने अपने हाथ का डायमंड ब्रसलेट बरखा को पहना दिया। बस फिर क्या था मनीष कुछ बोल ही नहीं पाया। इधर मनीष की मंगनी हो रही थी और उधर उस होटल में पुलिस की रेड पड़ी थी जिसमें रेखा को पुलिस ने देहव्यापार के जुर्म में पकड़ लिया था और यह सब टीवी पर देखकर रेखा कि इज्ज़तदार मां ने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी और पिता अपना मानसिक संतुलन खो बैठे और बरखा इज्ज़तदार करोड़पति परिवार की बहू बन गयी और रेखा को समाज रिश्तेदार व परिवार ने नहीं अपनाया और वह दुख में घर के बाहर बैठी रो रही थी कि वहां से गुजरते हुए एक किन्नर ने कहा, ''बहन, जिसे समाज नहीं अपनाता वो दर्द हम किन्नर बखूबी जानते हैं चलो मेरे साथ वरना कुछ इंसानी भेडिये तुम्हें नोंच खायेगें।'' और कुछ समय किन्नरों के बीच रहकर रेखा भी किन्नरों की तरह नाच गाकर पैसा कमाने लगी और एक बार किन्नरों के सम्मेलन में हिस्सा लेने वह गोआ जा पहुंची जहां वह किन्नरों के साथ मनीष के घर लड़का हुआ था के जश्न में जा पहुंची। जहां पर मनीष और उसकी पत्नी बरखा ने बीस हजार रूपये रेखा के हाथ पर रख दिए। जैसे ही मनीष ने पलट कर देखा कि यह रेखा? तो बरखा मनीष को जबरदस्ती घर के अंदर ले जाती हुई कहने लगी अरे! यार चौंक क्यों रहे हो? यह रेखा तो जन्मजात किन्नर थी तभी तो किन्नरों में शामिल हो गयी। मनीष ने कहा, ''मैं एक बार बात करूं?'' बरखा ने कहा, ''नहीं, तुम किन्नरों से दूर रहो।'' कुछ देर बाद सभी किन्नर वहां से जा चुके थे और रेखा गाड़ी मैं आंख बंद किये बस यही सोच रही थी कि आखिर! बरखा मनीष की पत्नी कैसे बन गयी? पर आज उसके पास सच समझाने वालीं न ही उसकी मां उसके पास थीं और न हीं उसके कोई दोस्त और न ही समाज के लोग? था तो सिर्फ़ पछतावा कि अगर मां कि बात मानी होती तो यह बरखा जैसी फ्रैंड (दोस्त) जिसमें ऐनेमी(शत्रु) छुपा हुआ था मुझे इस तरह धोखा देकर मेरे स्थान पर न बैठी होती। यह बरखा जैसे लोग फ्रेनेमी कहे जाते हैं।

*****

संपर्क सूत्र

आकांक्षा सक्सेना

मानवता

वाह! री मानवता
तु ऐसी क्यों है
जो सिर्फ दिखावे की है
उसमें कहीं भी सच्चापन नहीं है
जब सम्पूर्ण जगत पर
विकट परिस्थति आती है
तभी मानवता जाग्रत होती है
लेकिन वह भी,
सिर्फ दिखावे की है
उसमें विश्वसनीयता नहीं है
कुछ बिरले ही होंगे
जिनमें होगी सच्ची मानवता
कुछ के लिए मानवता खजाना है
इस मानवता की आड़ में
कुछ स्वार्थी बन जाते हैं
मानवता क्या हो?
एक सच्चा प्रेम है
एक सच्चा हृदय है
जो शायद किसी में हो।।

*****

संपर्क सूत्र

निधि चन्द्रा

माँ की ममता

माँ, आखिर माँ होती है,
कितनी बार समझाऊँ, मैं ठीक हूँ
फिर भी, समझती ही नहीं!
हर बार फोन करके पूछती,
कि बेटा कैसी हो? समय पर खा लेना
कैसे समझाऊँ, अब मैं छोटी बच्ची नहीं!

खुद कंजूसी कर, पैसे बचाकर,
घर वालों के लिए उपहार भेजती
कितनी बार समझाऊँ, ढंग से पहनाकर

पर मानती नहीं, कहती हैं बेटा अब मेरी उम्र नहीं
और पूछती हैं कि साड़ी कैसी लगी?
तुझे पसंद आई?
माँ आखिर माँ होती हैं ।
खुद बेटी की माँ बनने पर
माँ की ममता पहचान पाई
माँ आखिर माँ होती हैं ।

*****

संपर्क सूत्र

टी. अनुसूरिया
हिंदी विभाग अध्यक्ष
सैनिक स्कूल कोरुकोण्डा, आंध्र प्रदेश
8919812141
anu.yerramalla@gmail.com

हिंदी का उत्सव

भारत के दिल में, एक भाषा इतनी चमकीली,
हिंदी हमें एकजुट करती है, दिन और रात में।

शब्द जो नदियों की तरह नृत्य करते हैं, स्वतंत्र रूप से बहते हैं,
हमारी भूमि के हर कोने में, यही बंधन है जो हम देखते हैं।

ओ, हिंदी, हमारा गर्व, हमारी खुशी,
पहाड़ों से लेकर समुद्र तक, ओ हाय!
हर शब्द के साथ, हम गाते और खुश होते हैं,
हमारे दिलों में, तुम हमेशा पास हो।

हमारी संस्कृति की कहानियाँ, हर वाक्य में,
पुरानी महाकाव्य कथाओं से, आधुनिक दिनों तक।
प्रेम और हंसी के साथ, हम साझा करते हैं और जुड़ते हैं,
हिंदी की सुंदरता में, हमें सम्मान मिलता है।

ओ, हिंदी, हमारा गर्व, हमारी खुशी,
घाटियों से लेकर आसमान तक, ओ हाय!
हर शब्द के साथ, हम गाते और खुश होते हैं,
हमारे दिलों में, तुम हमेशा पास हो।

तो चलो, इस भाषा का उत्सव मनाते हैं जिसे हम पसंद करते हैं,
हर बातचीत के साथ, हम एक दरवाजा खोलते हैं।

साथ में, हम खिलेंगे, हाथ में हाथ डालकर,
हिंदी की धुन में, एकजुट होकर खड़े हैं।

ओ, हिंदी, हमारा गर्व, हमारी खुशी,
शहरों से लेकर खेतों तक, ओ हाय!
हर शब्द के साथ, हम गाते और खुश होते हैं,
हमारे दिलों में, तुम हमेशा पास हो।

आओ, इस संदेश को फैलाएं, प्रेम साझा करें,
हिंदी एक खज़ाना है, ऊपर से मिला उपहार।
हर धड़कन में, हर गीत में,

हमारी ज़िंदगी में हिंदी के साथ, हम सभी का संबंध है।

*****

संपर्क सूत्र

डॉ. शेख़ बेनज़ीर

हिन्दी प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, एस.वी.सि.आर शासकीय महाविद्यालय, पलमनेरू, चित्तूरु जिला, आन्ध्र प्रदेश

E–mail: sbr.shaik0786@gmail.com

Phone: 7382786328